Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

**अल्लाह तआला का आदेश**

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ۔

(सूरत आले-इम्रान आयत :130)

**अनुवाद:** और अल्लाह ही का है जो आकाशों और ज़मीन में है वह जिसे चाहता है क्षमा कर देता है और जिसे चाहता है आज़ाब देता है और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार बार रहम करने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 5

साप्ताहिक क़ादियान

# बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 23

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

11 शव्वाल 1441 हिजरी कमरी 4 इहसान 1399 हिजरी इहसान 4 जून 2020 ई.

**अख़बार-ए-अहमदिया**

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

**मैं देखता हूँ कि लोग नमाज़ों में ग़ाफ़िल और सुस्ती लिए होते हैं कि उनको इस आन्नद और मज़ा से सूचना नहीं जो अल्लाह तआला ने नमाज़ के अन्दर रखी है**

**ख़ुदा तआला से निहायत दर्द और एक जोश के साथ यह दुआ मांगनी चाहिए कि जिस तरह फलों और चीज़ों की तरह-तरह की लज़्ज़तें दी गई हैं। नमाज़ और इबादत का भी एक-बार मज़ा चखा दे।**

## *उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम*

**अबोदियत और रबोबियत के रिश्ता की वास्तविकता**

औरत और मर्द का जोड़ा तो झूठा और अस्थायी जोड़ा है। मैं कहता हूँ हक़ीक़ी चिरस्थायी और साक्षात आन्नद जो जोड़ा है वह इन्सान और ख़ुदा तआला का है। मुझे बहुत व्याकुलता होती और कभी कभी यह दुख मेरी जान को खाने लगता है कि एक दिन अगर किसी को रोटी खाने का मज़ा न आए तो डाक्टर के पास जाता और कैसी कैसी मिन्नतें और ख़ुशामदें करता, रुपया ख़र्च करता, दुख उठाता है कि वह मज़ा प्राप्त हो। वह ना-मुराद जो अपनी बीवी से लज़्ज़त प्राप्त नहीं कर सकता। कई बार घबरा घबरा कर ख़ुदकुशी के इरादे तक पहुंच जाता और अक्सर मौतें इस किस्म की हो जाती हैं। मगर आह! वह मरीज़े दिल, वह ना-मुराद क्यों कोशिश नहीं करता जिसको इबादत में आन्नद नहीं आता? इस की जान क्यों ग़म से निढाल नहीं हो जाती?दुनिया और इस की ख़ुशियों के लिए क्या कुछ करता है मगर चिरस्थायी और हक़ीक़ी राहतों की वह प्यास और तड़प नहीं पाता। किस क़दर बेनसीब है ! कैसा ही वंचित है! अस्थायी और नश्वर लज़्ज़तों के ईलाज तलाश करता है और पा लेता है। क्या हो सकता है कि स्थायी और सदैव की लज़्ज़त के ईलाज न हों? हैं और ज़रूर हैं मगर तलाश हक़ में दृढज और मज़बूत क़दमों की ज़रूरत है। क़ुरआन करीम में एक अवसर पर अल्लाह तआला ने सालेहीन की उदाहरण औरतों से दी है। इस में भी भेद है। ईमान लाने वालों को मर्यम और आसिया से उदाहरण दिया है अर्थात ख़ुदा तआला मुशरिकीन में से मोमिनों को पैदा करता है। बहरहाल औरतों से उदाहरण देने में वास्तव में एक सूक्ष्म भेद को प्रकट करना है अर्थात जिस तरह औरत और मर्द का आपसी सम्बन्ध होता है इसी तरह पर उबूदीयत और रबूबियत का रिश्ता है। अगर औरत और मर्द की आपसी रज़ामन्दी हो और एक दूसरे पर आशिक हो तो वह जोड़ा एक मुबारक और मुफ़ीद जोड़ा होता है वर्ना घरेलू निज़ाम बिगड़ जाता है और आन्नद का मूल लक्ष्य प्राप्त नहीं होता है। मर्द अन्य स्थानों पर ख़राब हो कर सैंकड़ों किस्म की बीमारियां ले आते हैं। आतिशक से मजज़ूम हो कर दुनिया में ही वंचित हो जाते हैं। और अगर औलाद हो भी जाए तो कई नस्ल तक यह सिलसिला बराबर चला जाता है और इधर औरत निर्लज्जता करती फिरती है और इज़्ज़त तथा सम्मान को डुबा कर भी सच्चा आन्नद प्राप्त नहीं कर सकते। अतः इस जोड़े से अलग हो कर किस क़दर बुरे नतीजे और फ़ित्ने पैदा होते हैं। इसी तरह पर इन्सान रुहानी जोड़े से अलग हो कर बुरा और मख़ज़ूल हो जाता है। दुनियावी जोड़े से ज़्यादा दुख तथा मुसीबत का निशाना बनता है। जैसा कि औरत और मर्द के जोड़े से एक किस्म की बक़ा के लिए आन्नद है। इसी तरह पर उबूदीयत और रबूबियत के जोड़े में एक स्थायी बक़ा के लिए आन्नद मौजूद है। सूफ़ी कहते हैं जिस को यह आन्नद नसीब हो जाए वह दुनिया और इस के समस्त आन्नदों से बढ़कर प्राथमिकता रखता है। अगर सारी उम्र में एक बार भी इस को मालूम हो जाए तो इस में ही फ़ना हो जाए लेकिन मुश्किल तो यह है कि दुनिया में एक बड़ी संख्या ऐसे लोगों की है जिन्हों ने इस भेद को नहीं समझा और उन की नमाज़ें सिर्फ़ टक्करें हैं और ऊपरे दिल के साथ एक किस्म की कठोरता और तंगी से सिर्फ उछने बैठने के तौर पर होती हैं। मुझे और भी अफ़सोस होता है जब मैं यह देखता हूँ कि कुछ लोग सिर्फ इस लिए नमाज़ें पढ़ते हैं कि वे दुनिया में भरोसा योग्य और सम्मान योग्य समझे जाएं और फिर उस नमाज़ से यह बात उनको प्राप्त हो जाती है अर्थात वे नमाज़ी और परहेज़गार कहलाते हैं। फिर उन को क्यों यह खा जाने वाला ग़म नहीं लगता कि जब झूट-मूट और बे-दिली की नमाज़ से उन को यह स्तर प्राप्त हा हो सकता है तो क्यों एक सच्चे आबिद बनने से उनको सम्मान न मिलेगा और कैसी इज़्ज़त मिलेगी।

**नमाज़ में लज़्ज़त न आने का कारण और इस का ईलाज**

अत: मैं देखता हूँ कि लोग नमाज़ों में ग़ाफ़िल और सुस्ती लिए होते हैं कि उनको इस आन्नद और मज़ा से सूचना नहीं जो अल्लाह तआला ने नमाज़ के अन्दर रखी है और बड़ी भारी कारण उस की यही है। फिर शहरों और गांव में तो और भी सुस्ती और ग़फ़लत होती है। सौ पचासवां हिस्सा भी तो पूरी चुस्ती और सच्ची मुहब्बत से अपने वास्तविक मौला के हुज़ूर सिर नहीं झुकाता। फिर सवाल यही पैदा होता है कि क्यों उन को इस आन्नद की सूचना नहीं और न कभी उन्होंने इस मज़ा को चखा। अन्य धर्मों में ऐसे आदेश नहीं हैं। कभी ऐसा होता है कि हम अपने कामों में मस्त होते हैं और मुअज़्ज़िन अज़ान दे देता है। फिर वह सुनना भी नहीं चाहते मानो उन के दिल दुखते हैं। ये लोग बहुत ही रहम के योग्य हैं। कुछ लोग यहां भी ऐसे हैं कि उनकी दुकानें देखो तो मस्जिदों के नीचे हैं मगर कभी जाकर खड़े भी तो नहीं होते। अत: मैं यह कहना चाहता हूँ कि ख़ुदा तआला से निहायत दर्द और एक जोश के साथ यह दुआ मांगनी चाहिए कि जिस तरह फलों और चीज़ों की तरह-तरह की लज़्ज़तें दी गई हैं। नमाज़ और इबादत का भी एक-बार मज़ा चखा दे। खाया हुआ याद रहता है। देखो अगर कोई व्यक्ति किसी ख़ूबसूरत को एक आन्नद के साथ देखता है, तो वह उसे ख़ूब याद रहता है और फिर अगर किसी बुरी शक्ल और घृणित चेहरा को देखता है तो इस की सारी हालत साक्षात उस के मूर्तिमान हो कर सामने आ जाती है। हाँ अगर कोई सम्बन्ध ना हो तो कुछ याद नहीं रहता। इसी तरह बे नमाज़ों के निकट नमाज़ एक सज़ा है कि अकारण सुबह उठ कर सर्दी में वुज़ू करके आराम की नींद छोड़कर और कई किस्म की सुविधाओं को खोकर पढ़नी पड़ती है। असल बात यह है कि उसे बेज़ारी है, वह इस को समझ नहीं सकता। इस लज़्ज़त और राहत से जो नमाज़ में है इस को सूचना नहीं है फिर नमाज़ में लज़्ज़त क्योंकर प्राप्त हो। मैं देखता हूँ कि एक शराबी और नशा करने वाला इन्सान को जब आन्नद नहीं आता तो वह एक के बाद दूसरा प्याला पीता जाता है यहां तक कि इस को एक किस्म का नशा

**शेष पृष्ठ 12 पर**

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

# सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का यूरोप का सफर, सितम्बर अक्तूबर 2019 ई (भाग-6)

**मस्जिद वह स्थान है जहां मुसलमान ख़ुदा तआला के सामने सिज्दा करने के लिए जमा होते हैं**

**मस्जिद की बनाने का दूसरा अहम उद्देश्य यह है कि मुसलमान इकट्ठे हो कर अपने आपसी सम्बन्धों को बेहतर करें और जमाअत के इत्तिहाद को बढ़ावा दें।**

**मस्जिदों की बनाने का तीसरा अहम उद्देश्य है कि मस्जिद ग़ैर मुस्लिम लोगों को इस्लामी शिक्षाओं से आगाही का माध्यम हो और यह कि समाज के अधिकार दिए जाएं**

**अतः मस्जिद एक ऐसा स्थान है कि जहां मुसलमान जमा हो कर बिना किसी रंग तथा नस्ल के भेद के अपने पड़ोसियों और समाज के अधिकार पूरे करें। हमारा ईमान है कि अगर एक मुसलमान अल्लाह तआला की इबादत और मस्जिद के अधिकार अदा करने की इच्छा रखता है तो उस के लिए अनिवार्य है कि वह मानव जाति के भी अधिकार अदा करे,मुसलमान की नज़र में अल्लाह तआला की सेवा और इन्सानियत की सेवा आपस में अनिवार्य तौर पर जुड़ी हुई है**

**अगर एक मुसलमान ख़ुदा न चाहे दूसरों को तकलीफ़ और परेशानी देता है और सहानुभूति नहीं दिखा सकता तो इस की समस्त इबादतें बेमानी और फ़ुज़ूल होंगी**

## मस्जिद बैयतुल आफियत हॉलैंड के उद्घाटन के अवसर पर सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का ख़िताब

**(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)**

**(अनुवादकः शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)**

**1 अक्तूबर 2019 ई (दिनांक मंगल) (शेष रिपोर्ट)**

इसके बाद मुहम्मद ज़ीशान साहिब जो कि यूरो टाईम्स बेल्जियम के प्रतिनिधि थे उन्होंने सवाल किया आजकल सियास्तदान और साईंसदान climate change के हवाला से आगाही देने की कोशिश कर रहे हैं। इस हवाला से हुज़ूर अनवर का क्या विचार है? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमायाः यह तो प्रकट है कि दुनिया में प्रत्येक स्थान पर बढ़ती हुई आबादी के सम्मुख तामीर वाले क्षेत्र में भी वृद्धि हो रहा है। लोगों ने तो रहना है, इस वजह से दरख़्तों को काटा जा रहा और deforestation की जा रही है और नए दरख़्त नहीं लगाए जा रहे विशेष रूप से तरक़्क़ी करने वाले देशों में। इस के साथ साथ कार्बन emission का कारण इंडस्ट्री भी एक वजह है जो कि माहौल को प्रभावित कर रही है। फिर इसके अतिरिक्त मैंने कहा था कि जंगों से भी माहौल प्रभावित होता है और अब तो काफ़ी समीक्षकों ने यह कहना शुरू कर दिया है कि मिडल ईस्ट देशों में जारी जंग की वजह से emission भी गर्मी में वृद्धि का कारण बन रही है। इसलिए यह भी climate change की एक वजह बन सकती है बल्कि मेरा विचार है एक वजह यह भी है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अतः हमें वृक्षारोपण की तरफ़ विशेष ध्यान देना चाहिए और फिर कार्बन emission को कम करने की तरफ़ ध्यान देनी चाहिए। फिर आजकल प्रयोग होने वाले हथियार भी emission पैदा कर रहे हैं, इंडस्ट्री भी एक वजह बन रही है।

इसी पत्रकार ने पूछा कि डच गर्वनमैंट ने समस्त गर्वनमैंट के संस्थाओं की इमारतों में हिजाब और बुर्क़ा पर पाबंदी लगा दी है। इस हवाला से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ की क्या राय है? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमायाः मेरे निकट अगर कोई कहता है कि यह मेरा धार्मिक कर्तव्य है कि मैं अमुक किस्म का लिबास पहनना चाहता हूं तो हुकूमतों को उनके मामलों में दख़ल अंदाज़ी नहीं करनी चाहिए। यह दूसरों के धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप करने वाली बात बन जाती है। कैनेडा की पार्लीमैंट में एक सिख ने तक़रीर की जिसमें उसने कहा कि मुझे पगड़ी पहनने का हक़ प्राप्त है और एक यहूदी को अपनी छोटी टोपी पहनने का हक़ है, ईसाईयों के भी अधिकार हैं, इसी तरह अगर मुसलमान औरतें बिना किसी ज़बरदस्ती के , अपनी इच्छा के साथ बुर्क़ा या हिजाब पहनना चाहती हैं तो उन्हें उनके इस हक़ से वंचित नहीं करना चाहिए

इस के बाद एक पत्रकार ने पूछा कि यहां प्रैस कान्फ्रैंस में कोई भी औरत नहीं है। इस की क्या वजह है? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमायाः मुझे नहीं पता कि कोई औरत क्यों नहीं है? वर्ना में जब जर्मनी, अमरीका या कैनेडा इत्यादि जाता हूँ तो वहां पर तो प्रैस कान्फ्रैंसों में काफ़ी औरतें भी मौजूद होती हैं।

फिर पत्रकार ने पूछा कि क्या औरतें इस मस्जिद में आ सकती हैं और क्या वे मर्दों के साथ नमाज़ पढ़ सकती हैं? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमायाः पहली बात तो यह कि औरतों को मस्जिद में आने की आज्ञा है। दूसरा यह कि इस मस्जिद में नमाज़ पढ़ने की भी आज्ञा है लेकिन हमारी धार्मिक शिक्षाओं की दृष्टि से औरतों को नमाज़ पढ़ने के लिए लगभग मर्दों के हाल की तरह एक अलग हाल उपलब्ध किया गया है। कई बार यह हाल साथ साथ स्थित होते हैं, कई बार मर्द ऊपर और औरतें नीचे और कई बार मर्द नीचे और औरतें ऊपर होती हैं। हमारे अक़ीदा के अनुसार अगर मर्द और औरत अलग अलग हों तो अधिक बेहतर रंग में नमाज़ की तरफ़ ध्यान कर सकते हैं।

इसी पत्रकार ने सवाल किया कि क्या ग़ैर मुस्लिमों को भी इस मस्जिद में आकर इबादत करने की आज्ञा है? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमायाः इस्लाम धर्म के संस्थापक रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में आप के पास नजरान से एक ईसाई वफ़द आया और जब वह इस्लाम के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ गुफ़्तगु कर रहे थे तो आप ने महसूस किया कि ये लोग कुछ परेशान हैं और आराम महसूस नहीं कर रहे। इस पर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा कि क्या मामला है? वफ़द के मेम्बरों ने जवाब दिया कि हमारी इबादत का समय हो गया है। शायद उस दिन इतवार हो। तो हमारे पास कोई स्थान नहीं है जहां पर हम अपने धर्म और रिवायतों के अनुसार इबादत कर सकें। इस पर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि आप हमारी मस्जिद में बैठे हुए हैं, आप यहां अपनी शिक्षाओं के अनुसार इबादत कर सकते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया मस्जिदें तो इबादत के लिए बनाई जाती हैं। जो भी एक सामर्थ वाले ख़ुदा की इबादत करना चाहता है उसे यहां आकर इबादत करने की आज्ञा होगी। यहां बुत तो नहीं रखे जाते इसलिए अगर आप एक ख़ुदा की इबादत करना चाहते हैं तो कर सकते हैं। इसी लिए रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी ईसाईयों को अपने तरीक़ा के अनुसार इबादत करने की आज्ञा प्रदान फ़रमाई थी।

**1 अक्तूबर 2019 ई दिनांक मंगल**

प्रैस कान्फ्रैंस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद से जुड़े हुए दफ़्तर, मिशन हाऊस और विभिन्न स्थानों का निरीक्षण फ़रमाया।

मस्जिद की ज़मीन का कल क्षेत्रफल 1683 वर्ग मीटर है। यह ज़मीन दिसम्बर 2012 ई में दो लाख 76 हज़ार यूरो में ख़रीदी गई और दिसम्बर 2014 ई में यह ज़मीन जमाअत के नाम रजिस्टर्ड हुई।

**शेष पृष्ठ 9 पर**

# ख़ुत्बः जुमअः

**हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ही हैं जिनके साथ जुड़ कर बंदे और ख़ुदा के बीच हक़ीक़ी सम्बन्ध पैदा करने का तरीक़ा हमें आ सकता है और आता है और ख़ुदा तआला के ज़िन्दा होने पर कामिल यक़ीन और इस की रज़ा पर राज़ी रहने के उच्च स्तर होते हैं।**

**हमेशा अगर कुछ माँगना है तो ख़ुदा तआला से मांगे और कभी मुतालिबा ना करे, यह इंतिहाई ज़रूरी विशेषता है जो हर वाक़िफ़ ज़िन्दगी को अपनाने की कोशिश करनी चाहिए।**

**हमारे हर डाक्टर को हर तबीब को सिर्फ अपने पेशे की महारत पर ही भरोसा न हो, सिर्फ़ दवाईयों पर यक़ीन न हो बल्कि जहां ईलाज के दौरान मरीज़ के साथ अच्छे आचरण से पेश आएं वहां उनके लिए दुआ भी ज़रूर किया करें और अगर नफ़ल पढ़ें तो यह तो बहुत ही अच्छी बात है।**

## धर्म को दुनिया पर मुक़द्दम करने के अह्द बैअत को अपनी ताक़तों के अनुसार निभाने वाले, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत का हक़ अदा करने वाले, ख़िलाफ़त अहमदिया से कामिल वफ़ा और इख़लास का सम्बन्ध रखने वाले, हुक़ूक़ुल ईबाद का हक़ अदा करने वाले और इस्लाम की जिस ख़ूबसूरत शिक्षा पर अनुकरण करवाने के लिए अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम को भेजा है इस की अमली अवस्था को अपनी ज़ात से साबित करने वाले तीन मरहूमीन मिसाली वाकिफ ज़िन्दगी आदरणीय ज़ुल्फ़िक़ार अहमद डॉमानक (Damanik) साहिब क्षेत्रीय मुबल्लिग़ सिलसिला इंडोनेशिया, दुआ करने वाले, हमदर्द और बेनफ़्स डाक्टर पीर मुहम्मद नक़ीउद्दीन साहिब इस्लामाबाद पाकिस्तान और वक़्फ़ ज़िन्दगी की भावना के साथ ख़िदमत करने वाले आदरणीय ग़ुलाम मुस्तफ़ा साहिब रज़ाकार कारकुन दफ़्तर प्राईवेट सैक्रेटरी (यूके) की वफ़ात पर मरहूमीन का ज़िक्रे ख़ैर

**"हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ...फ़रमाया था ये लोग शुहदा में शामिल हैं।"**

---

**ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 1 मई 2020 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू. के)**

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

इस वक़्त में चंद मरहूमीन का वर्णन करना चाहता हूँ जिनकी पिछले दिनों वफ़ात हुई। उनमें से हर एक विभिन्न पेशे से सम्बन्धित था, विभिन्न व्यस्तताएं थीं, शैक्षिक स्तर विभिन्न थे लेकिन एक चीज़ साझी थी कि धर्म को दुनिया पर मुक़द्दम करने के अह्द बैअत को अपनी ताक़तों के अनुसार निभाने वाले, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत का हक़ अदा करने वाले, ख़िलाफ़त अहमदिया से कामिल वफ़ा और इख़लास का सम्बन्ध रखने वाले, हुक़ूक़ुल ईबाद का हक़ अदा करने वाले थे। और यह बात साबित करने वाले थे कि इस्लाम की जिस ख़ूबसूरत शिक्षा पर अमल करवाने के लिए अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम को भेजा है इस की व्यावहारिक सूरत हक़ीक़त में उनमें पाई जाती थी

मैंने कहा कि यह एक चीज़ साझी थी। यह एक नहीं बल्कि यह बहुत सारी विशेषताएं उनमें साझी थीं। उनकी घटनाऐं , ये बातें, ये चीज़ें सुनकर यह यक़ीन पैदा होता है कि इस ज़माना में, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ही हैं जिनके साथ जुड़ कर बंदे और ख़ुदा के बीच हक़ीक़ी सम्बन्ध पैदा करने का तरीक़ा हमें आ सकता है और आता है और ख़ुदा तआला के ज़िन्दा होने पर कामिल यक़ीन और इस की रज़ा पर राज़ी रहने के उच्च स्तर हासिल होते हैं।

जिन मरहूमीन का ज़िक्र मैं ने करना है उनमें से एक हमारे मुबल्लिग़ सिलसिला ज़ुल्फ़िक़ार अहमद डॉमानक साहिब, क्षेत्रीय मुबल्लिग़ इंडोनेशिया के थे जो 21 अप्रैल को 42 साल की उम्र में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि रजिऊन। मरहूम का जन्म 24 मई1978 ई की है। नॉर्थ सुमात्रा में पैदा हुए। उनके पिता का नाम शहरोल डॉमानक है। उनके दादा का नाम शहनोर डॉमानक था। मरहूम के ख़ानदान में अहमदियत का आरम्भ उनके दादा के माध्यम से हुआ था जिन्होंने 1944 ई में मौलाना ज़ैनी दहलान साहिब के माध्यम से बैअत की थी। मरहूम मुबल्लिग़ सिलसिला ज़ुल्फ़िक़ार साहिब ने 1997 ई से 2002 ई तक जामिआ अहमदिया इंडोनेशिया में शिक्षा हासिल की। वहां उस ज़माना में कोर्स चंद सालों का , थोड़ा होता था। फिर उस के बाद उनको अठारह साल विभिन्न जगहों पर बतौर मुबल्लिग़ सिलसिला ख़िदमत सरअंजाम देने की तौफ़ीक़ प्राप्त हुई और फिर यह विभिन्न इलाक़ों में बतौर मुबल्लिग़ ख़िदमात सरअंजाम देते रहे। पीछे रहने वालों में उनकी एक पत्नी आदरणीया मरयम सिद्दीक़ा साहिबा हैं और इस के अलावा चार बच्चे हैं जाज़िब और आईशा ख़ोला और ख़ीरा फ़ातिमा और ख़ैसरा नसीरा। बच्चा जो है पंद्रह साल का है और छोटी बच्ची आठ माह की है और ये समस्त वक़्फ़ नौ की स्कीम में शामिल हैं।

वहां के हमारे मुबल्लिग़ मेराज दीन साहिब वर्णन करते हैं कि ज़ुल्फ़िक़ार साहिब बहुत ही कामयाब और मेहनती मुबल्लिग़ थे। जहां भी उनकी पोस्टिंग होती वहां तर्बीयत, सम्पर्क क़ायम करने और तब्लीग़ के कामों को निहायत उम्दगी से सरअंजाम देते थे। महोदय हर एक के साथ नरमी से बात करते थे और सब के साथ दोस्ताना सम्बन्धा रखते। जब मिलते हमेशा मुस्कुराते हुए चेहरे के साथ मिलते थे। कभी किसी चीज़ का मुतालिबा नहीं करते थे बल्कि हमेशा दुआ करने की नसीहत किया करते थे और यही वह विशेषता है जो एक वाकिफ ज़िन्दगी की रूह है और इस में होनी चाहिए कि अगर कुछ माँगना है तो हमेशा ख़ुदा तआला से मांगे और कभी मांग न करे और यह इंतिहाई ज़रूरी विशेषता है जो हर वाक़िफ़ ज़िन्दगी को अपनाने की कोशिश करनी चाहिए

महोदय अल्लाह तआला के फ़ज़ल से उन मुबल्लग़ीन में शामिल थे जिन्हें बहुत अधिक संख्या में बैअतें करवाने की सआदत मिली और इस वजह से आपको जमाअत के इंतिज़ाम के अधीन 2018 ई में यहां जलसे पर आने का भी मौक़ा मिला। व्यावहारिक मैदान में महोदय हमेशा अच्छी प्लैनिंग के साथ काम सरअंजाम देते थे जिसकी वजह से आपको हर जगह कामयाबी नसीब होती थी।

इसी तरह आसिफ़ मुईन साहिब मुरब्बी सिलसिला उनकी ख़ूबियों का ज़िक्र करते हुए लिखते हैं कि बहुत सी ख़ूबियों के मालिक थे। निहायत सालिह इन्सान थे। मुख़लिस और फ़रमांबर्दार थे। कुछ समय से यह बीमार थे, बीमारी के इन दिनों में भी मरहूम जमाअत की ख़िदमतों को प्राथमिकता देते थे। आसिफ़ साहिब कहते हैं कि

जब सूबा रियाओ (Riao) के रीजन में बतौर क्षेत्रीय मुबल्लिग़ काम कर रहे थे तो मुझे (आसिफ़ साहिब को) उनके साथ काम करने की, उनके अधीन काम करने की तौफ़ीक़ मिली। और बड़ी आला क़ियादत के साथ यह काम करवाते थे। गर्वनमेन्ट और सूबे की विभिन्न तन्ज़ीमों के साथ मज़बूत सम्पर्क क़ायम किए हुए थे जिसके कारण से आपको कई बार विभिन्न यूनीवर्सिटीयों में लैक्चर देने का भी मौक़ा मिला। इस के इलावा आपने सूबे में सारी lost generation के साथ सम्पर्क कर के उन्हें जमाअत के बारे में परिचित करवाया और पूरे सूबे में इस तरह की मुहिम जारी रखी और एक लोकल जमाअत संगीगी (Senggigi) को लगभग बीस साल के बाद दोबारा क़ायम करने की उनको तौफ़ीक़ मिली। यह lost generation जिसको वहां यह लोग कहते हैं उनसे सम्पर्क क़ायम करने के लिए उनको किश्ती के माध्यम से छोटे छोटे द्वीपों में जाना पड़ता था और एक द्वीप से दूसरे जज़ीरे तक डेढ़ दो घंटे का सफ़र था और मरीज़ होने के बावजूद हिम्मत करते और कहते कि मेरे अंदर जब तक ख़िदमत की ताक़त है मैं आख़िरी दम तक ख़िदमत करता रहूँगा और उन सफ़रों के नतीजे में चार ख़ानदान अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जमाअत की आग़ोश में आए।

महोदय डायलेसज़ (dialysis) की वजह से हस्पताल में इलाज करवा रहे थे तो इस हालत में भी एक लोकल इजलास में शामिल हुए। वहां के एक ख़ादिम ने जब आपसे पूछा कि आपने इतनी तकलीफ़ क्यों उठाई तो इस पर आप ने उसे जवाब दिया कि जब तक मुझ में जान है मैं जमाअत के समस्त प्रोग्रामों में शामिल होने की कोशिश करता रहूँगा। यद्यपि मैं बीमार भी हूँ लेकिन मेरी इच्छा है कि मैं हमेशा ख़िदमते दीन के कामों में व्यस्त रहूं। यह है वाकिफ ज़िन्दगी की वह भावना जो हर एक वाकिफ ज़िन्दगी में होनी चाहिए न यह कि ज़रा ज़रा सी बात पर कई लोग जो परेशानियों का इज़हार शुरू कर देते हैं वह इज़हार शुरू हो जाए।

इसी तरह मुज़फ़्फ़र अहमद साहिब वहां के मुरब्बी हैं। वह लिखते हैं कि मुझे उनके साथ जामिया में पढ़ने का मौक़ा मिला और आख़िरी बार कादियान मैं उनसे मुलाक़ात हुई थी अर्थात कि कादियान उनके साथ गए थे। शायद इस साल गए थे। कादियान जाने से पहले जब मरहूम बहुत ज़्यादा बीमार थे तो यह दुआ किया करते थे कि अल्लाह तआला इतनी उम्र दे कि मैं कादियान जा सकूं। आप कहते थे कि बैतुल्लाह में उमरा भी करने की तौफ़ीक़ अल्लाह तआला ने दी और ख़लीफ़ा वक़्त से मुलाक़ात का भी मौक़ा मिल गया। अब कादियान की ज़यारत की हसरत बाक़ी है। अत: अल्लाह तआला के फ़ज़ल से अल्लाह तआला ने उनकी यह इच्छा भी पूरी फ़रमाई और कादियान की ज़यारत उन्हें नसीब हुई। इस साल जलसा तो नहीं हुआ लेकिन इस से रोकने से पहले ये लोग वहां पहुंच चुके थे। इस तरह उनको वहां आज़ादी से इबादत का भी मौक़ा मिला। यह मुरब्बी साहिब लिखते हैं कादियान में सख़्त मौसम और बहुत सर्दी की वजह से महोदय की तबीयत बहुत ज़्यादा ख़राब भी हुई जिसकी वजह से उन्हें जल्द इंडोनेशिया वापस जाना पड़ा लेकिन इस नाज़ुक अवस्था में भी आपका नेक इरादा पूरा हो गया। अत: महोदय को बैतुद्दुआ और मस्जिद मुबारक में नमाज़ पढ़ने और दुआ करने की सआदत हासिल हुई। फिर कहते हैं कि मैं उनको व्हेल चेयर पर बिठा कर बहश्ती मक़बरे की ज़यारत के लिए भी ले गया। वहां उन्होंने दुआ भी की। महोदय बहुत ही मेहनती मुबल्लिग़ थे। शिद्दत बीमारी के बावजूद आपने कभी हिम्मत नहीं हारी और जो भी जमाअत की काम आपके सपुर्द होता बख़ूबी उसे सरअंजाम देते। इसी तरह साजिद साहिब एक और मुरब्बी हैं वह लिखते हैं बावजूद सीनीयर होने के आप तब्लीग़ी मामलों में जूनीयरज़ की भी राय लेने में कभी झिझकते नहीं थे। तबीयत में बहुत विनम्रता और विनय था। मरहूम बहुत ही पुख़्ता इरादे वाले थे। महोदय पिछले साल बीमार हो गए लेकिन ठीक होते ही लंबा सफ़र कर के ख़ुद्दामुल अहमदिया के इज्तिमा में शामिल हुए।

बासू की साहिब हैं वह लिखते हैं कि यह मुबल्लिग़ इंचार्ज भी थे। आख़िरी तीन साल जब ख़ाकसार की तैनाती मिशन हाऊस ऑफ़िस में हुई और तब्लीग़ी प्रोग्रामों के हवाले से मैदाने अमल में काम करने वाले मुबल्लग़ीन से सम्पर्क हुआ तो उस वक़्त मैंने देखा कि तब्लीग़ी प्रोग्राम तश्कील देने में मरहूम बहुत उम्दगी से काम करते थे। तब्लीग़ी प्रोग्रामों को कामयाब बनाने के लिए दाईयान और लोकल मुबल्लग़ीन के इंतिज़ाम अच्छी तरह और महारत से सरअंजाम देते और ख़ाकसार से हमेशा कहा करते थे कि बैअत की संख्या अपडेट करते रहना चाहिए ताकि क्षेत्र में काम करने वाले दाईयान की हौसला-अफ़ज़ाई होती रहे और यही तरीक़ा है कि बैअतों की संख्या को देखा जाए, दाईआन को भी बताया जाए और उनसे पूछा जाता रहे। इसी तरह फिर दाईआन भी एक्टिव रहते हैं और बाक़ी निज़ाम में भी इन नौमुबायीन को समोया जा है।

सरमद साहिब मुरब्बी हैं वह कहते हैं कि तब्लीग़ी उमूर को सरअंजाम देने का वह एक ख़ास जज़बा रखते थे। जब हम उत्तरी सुमात्रा क्षेत्र में बोंटो पाने से लेकर स्टेट के सरहदी इलाक़े सोसा तक तब्लीग़ के नए रास्ते खोलने की मुहिम तैयार कर रहे थे तो आपने बड़ी हिम्मत और उम्मीद से विभिन्न प्रोग्राम और मंसूबे तैयार किए और अल्लाह के फ़ज़ल से यह मुहिम काफ़ी देर तक जारी रही और बाद में फ़ंडज़ की कुछ कमी की वजह से इस में कोई रोक भी पैदा हुई लेकिन उनकी इस मुहिम के नतीजे निकले और वहां अक्सर नौ मुबाईन इसी इलाक़े से आए। आप हमेशा यह कहा करते थे कि कभी मायूस नहीं होना क्योंकि हमारा काम तो तब्लीग़ करना और बीज लगाना है। हो सकता है कटाई या उस का फल किसी और के हिस्सा में आए। बहरहाल बड़े दृढ़ इरादे वाले और वफ़ा के साथ अपना वक़्फ़ निभाने वाले थे।

अल्लाह तआला उनके स्तर बुलंद फ़रमाए। उन्होंने अपने अहद बैअत को भी निभाया और वक़्फ़ के अह्द को भी ख़ूबसूरती के साथ निभाया। अल्लाह तआला उनके दर्जात बुलंद फ़रमाता रहे। उनकी पत्नी और उनके बच्चों को अपनी हिफ़ाज़त में रखे और ख़ुद ही उनका कफ़ील भी हो।

दूसरे मरहूम जिनका मैंने ज़िक्र करना है वह इस्लामाबाद पाकिस्तान के डाक्टर पीर मुहम्मद नक़ीउद्दीन साहिब हैं जो 18 अप्रैल को वफ़ात पा गए थे। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इले राजेऊन। वफ़ात से कोई हफ़्ता दस दिन पहले उनको यह जो कोरोना वाइरस फैला है इस की निशानियां ज़ाहिर होना शुरू हुईं। इस पर उनको हस्पताल दाख़िल किराया गया। पहले तो उनकी तबीयत स्टेबल (stable) होने लगी थी मगर फिर 18 अप्रैल को तबीयत ख़राब हुई और आई सी यू में शिफ़्ट कर दिया गया जहां लगभग शाम को यह अल्लाह तआला के हुज़ूर हाज़िर हो गए। मरहूम के पीछे रहने वालों में उनकी पत्नी के इलावा एक बेटा और चार बेटियां शामिल हैं। सब शादीशुदा हैं और अपने-अपने घरों में आबाद हैं। पीर मुहम्मद नक़ीउद्दीन साहिब मरहूम के दधियाल और नन्हियाल सब सहाबा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की औलाद में से थे। आपकी वंशावली हज़रत सूफ़ी अहमद जान साहिब रज़ि से मिलती है। आपके दादा हज़रत पीर मज़हरुल हक़ साहिब रज़ि और नाना हज़रत मास्टर नज़ीर हुसैन साहिब रज़ि दोनों को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के प्रसिद्ध सहाबा में शामिल होने का समामान हासिल है। हज़रत पीर मज़हरुल हक़ साहिब रज़ि को कादियान में मदर्रसा अहमदिया में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि का क्लास फ़ैलो होने का सौभाग्य भी हासिल था। लुधियाना से बचपन में हिजरत कर के यह कादियान आए और लगभग छ: माह तक यह पीर मज़हरुल हक़ साहिब रज़ि इत्यादि को हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के घर में रहने का भी सौभाग्य नसीब हुआ। मुहतरम डाक्टर साहिब की माता हकीम मुहम्मद हुसैन साहिब मरहम ईसा की पोती थीं। डाक्टर पीर मुहम्मद नक़ी साहिब 1947 ई में बारत विभाजन के वक़्त लगभग एक साल की उम्र के थे अर्थात लगभग 1946 ई का उनका जन्म है। इस तरह लगभग 74 साल उनकी उम्र हुई। आप ख़ानदान के साथ कादियान से हिजरत कर के पहले लाहौर आए। फिर मीलसी ज़िला वहाड़ी में हुए। 1970 ई में नश्तर मैडीकल कॉलेज से एम.बी.बी.एस किया। 1976-1975 ई में इस्लामाबाद शिफ़्ट हुए। फिर यहां के सरकारी हस्पताल पोली क्लीनिक में नौकरी मिली। काफ़ी समय यहां सेवा करने के बाद नौकरी छोड़कर ईरान चले गए। दो तीन साल तक वहां काम किया फिर वापस पाकिस्तान आए। यहां इस्लामाबाद में अपना क्लीनिक खोला और पिछले पच्चीस तीस साल से अपना क्लीनिक चला रहे थे। अल्लाह के फ़ज़्ल से बड़ा कामयाब था। ग़रीबों की बड़ी सेवा करते थे।

डाक्टर अब्दुल बारी साहिब अमीर जमाअत इस्लामाबाद लिखते हैं कि डाक्टर पीर मुहम्मद नक़ीउद्दीन साहिब पिछले बारह साल से अधिक समय से जमाअत अहमदिया इस्लामाबाद में क़ाज़ी के मन्सब पर ख़िदमत कर रहे थे। आपके फ़ैसले हमेशा क़ुरआन व सुन्नत की रोशनी में हुआ करते थे जो दोनों पक्षों के लिए निहायत तसल्ली का कारण होता था। इंतिहाई अच्छे आचरण वाले, मिलनसार, प्यार करने वाले, दयालु, ग़रीबों का ध्यान रखने वाले और हर दिल अज़ीज़ शख़्सियत के मालिक थे। हर एक से मुस्कुराते चेहरे से मिलते। पेशे की दृष्टि से डाक्टर थे। इसलिए दिन रात ख़ुदा की मख़लूक की ख़िदमत में हमेशा आगे रहते। जमाअत के गरीबों और मजबूर मरीज़ों के लिए आपका क्लीनिक हमेशा खुला रहता और आप अक्सर बिना क़ीमत के सबको फ़ैज़याब फ़रमाते। सिर्फ जमाअत के ही नहीं बाक़ी ग़ैरों के लिए भी उनका दिल और क्लीनिक हमेशा खुला रहता था। लोगों को भलाई पहुचाने वाले वजूद थे। आपका हलक़ा अहबाब बहुत फैला हुआ था और इस में

ग़ैर अज़ जमाअत लोगों की बड़ी संख्या शामिल थी। अल्लाह तआला ने आपको तक़रीर करने की ताकत भी वर्णन फ़रमाई थी। अत: ग़ैर अज़ जमाअत दोस्तों को सच्चाई का पैग़ाम पहुंचाने का कोई अवसर नष्ट नहीं जाने देते थे। इन हालात में भी अल्लाह के फ़ज़ल से पैग़ाम पहुचाते थे।

यह कहते हैं डाक्टर साहिब ने उनको बताया कि जब 1970 ई में मैंने एम.बी .बी. एस का इम्तिहान पास किया तो मैं अपने दादा हज़रत पीर मज़हरुल हक़ साहिब के पास रब्वह गया और उन्हें यह ख़ुशख़बरी सुनाई कि मैं अपने ख़ानदान में डाक्टर बनने वाला पहला नौजवान था। मेरे दादा बड़े ख़ुश हुए और मुझे अन्य नसीहतें करने के इलावा यह भी नसीहत की कि अपने मरीज़ों को दवा देने के इलावा उनके लिए दुआ भी करना क्योंकि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाया करते थे कि जो तबीब अपने बीमारों के लिए दुआ नहीं करता और सिर्फ अपने इलाज पर भरोसा करता है वह दरअसल शिर्क करने वाला होता है। डाक्टर नक़ीउद्दीन साहिब फ़रमाते थे कि मुझे डाकटरी का पेशा करते पचास साल हुए हैं ओर मैं पचास साल से अपने दादा की नसीहत पर अमल करते हुए अपने मरीज़ों के लिए न सिर्फ यह कि सस्ता इलाज करता हूँ, उनके साथ अच्छे आचरण से पेश आता हूँ बल्कि दैनिक हर-रोज़ दो नफ़ल नमाज़ पढ़ता हूँ। दो नफ़ल अदा करता हूँ और उनके लिए दुआ भी करता हूँ। यह है वह तरीक़ा जो हमारे हर डाक्टर को, हर तबीब को अपनाना चाहिए। सिर्फ अपने पेशे की महारत पर ही भरोसा न रखें, सिर्फ दवाइयों पर यक़ीन ना हो बल्कि जहां इलाज के दौरान मरीज़ के साथ अच्छे आचरण से पेश आएं वहां उनके लिए दुआ भी ज़रूर क्या करें और अगर नफ़ल पढ़ें तो यह तो बहुत ही अच्छी बात है।

उनकी पत्नी उज़्मा नक़ी साहिबा बयान करती हैं कि मेरे पति इंतिहाई मुख़लिस और फ़िदाई अहमदी थे। तब्लीग़ अहमदिया का जुनून की हद तक शौक़ था और आपने अपनी ज़िन्दगी में कई बैअतें भी करवाईं और बहुत से लोगों को अहमदियत की सदाक़त के बारे में क़ाइल भी किया। बहुत से लोग हैं जो भय के वजह से या किसी वजह से अहमदियत तो स्वीकार नहीं करते लेकिन उनको कम से कम अहमदियत की सदाक़त का क़ाइल कर लिया और उनको चुप करा दिया। इस के बाद फिर उनसे सम्बन्ध भी अच्छे हुए। फिर कहती हैं , उन्होंने भी यही लिखा है कि इस मुहब्बत के समक्ष जो उनको मरीज़ों से थी, मरीज़ों के लिए दो नफ़ल हमेशा पढ़ते थे। फिर कहती हैं कि मरीज़ों की इस मुहब्बत के सम्मुख महामारी के दिनों में भी क्लीनिक जाते कि मेरे मरीज़ परेशान न हों। बुख़ार होने पर छुट्टी की। फिर लिखती हैं यह जो विशेषताएं थीं। मरीज़ों को चैक करना और उनका ख़्याल रखना और उनके लिए दुआएं करना इन गुणों के साथ एक इंतिहाई आज्ञाकारी बेटे थे, मिसाली पति थे, दयालु और मुहब्बत करने वाले बाप थे और बहन भाइयों और दोस्तों का बहुत ख़्याल रखने वाले लोगों को लाभ पहुंचाने वाले वजूद थे। ज़िन्दा ख़ुदा से बहुत गहरा सम्बन्ध था। बहुत अधिक दुआ करने वाले थे और ज़िन्दा व क़ायम ख़ुदा उनकी दुआओं का जवाब भी देता था। कहती हैं हमारी एक बेटी के यहाँ शादी के कुछ साल बाद तक औलाद नहीं हुई। इस के लिए बहुत दुआ करते थे तो एक रात हम इस बेटी के घर रहे। सुबह वाश रुम से जब यह तहज्जुद के समय वुज़ू कर के या शायद नमाज़ के वक़्त निकले हैं तो थोड़ा सा झुके। पूछने पर बताया कि यहां बैड के साथ एक बच्चा था अर्थात कशफ़ी रंग में उन्होंने और दूसरी रिवायत में भी है कि कश्फ़ी रंग में एक बच्चा देखा और वह बैड पर था। कहते थे मुझे लगा कि वह बच्चा गिरने लगा था। इसलिए वह एक दम उस को पकड़ने के लिए झुके थे। इस घटना के कुछ अर्से बाद ही अल्लाह तआला ने फ़ज़्ल किया और उनकी इस बेटी को बेटे से नवाज़ा जबकि डाक्टर ज़्यादा उम्मीद नहीं रखते थे। अल्लाह तआला इस बच्चे को भी नेक और ख़ादिम बनाए।

अरशद एजाज़ साहिब उनके भांजे हैं, दामाद हैं कहते हैं कि मरहूम मेरे रिश्ते में सबसे बड़े मामो थे। इसलिए जब से होश सँभाला उनके बारे में बहुत कुछ सुना और देखा। बहुत दुआ करने वाले, ग़रीब के हमदर्द, बेनफ़्स, इंतिहाई नफ़ीस और मुश्किल से मुश्किल वक़्त में भी ख़ुदा और रसूल के आदेशों को सामने रखते। कोई भी मश्वरा घरेलू, जमाअत का या दुनयवी तौर पर लेना होता तो वे कहते हैं बिना झिझक सबसे पहले हमारे ज़हन में यही आता कि मामूं के पास जाया जाए, उनसे मश्वरा लिया जाये। अपने मामूं डाक्टर साहिब के बारे में कहते हैं कि उनका एक और कश्फ़ जो शायद किसी और को भी मालूम हो वह एम.टी..ए के बारे में है है। कहते हैं शायद 2010 ई की घटना है जबकि अभी मोबाइल फ़ोन प्राय और आजकल की शक्ल के टच मोबाइल पाकिस्तान में कम से कम आम न थे। कहते हैं मैं मामूं के पास बैठा था। उनकी बातें सुन रहा था तो बताने लगे कि कुछ अरसा पहले मैंने देखा कि ऐलान होता है। जैसे अज़ान हुई हो और कुछ लोग अपनी जेब से कुछ निकाल कर अपने कानों को लगा लेते हैं। मालूम करने पर पता लगता है कि ख़लीफ़ तुल मसीह के ख़ुत्बे का वक़्त है और सभी लोग लाइव ख़ुतबा सुन रहे हैं। इस बात को कहते हैं कि आज हम हर हफ़्ता पूरा होते देखते हैं।

फिर लिखते हैं कि हज़रत सूफ़ी अहमद जान साहिब रज़ि के ख़ानदान से सम्बन्ध को न सिर्फ अपने लिए इज़्ज़त का कारण गरदानते थे बल्कि बाक़ी ख़ानदान के लोगों को भी नसीहत करते थे कि अल्लाह तआला से ज़ाती सम्बन्ध होना चाहिए। सिर्फ किसी बुज़ुर्ग के ख़ानदान का होना तो कोई कमाल नहीं है इसलिए असल चीज़ यह है कि तुम्हारा अपना सम्बन्ध हो। हरवक़त दावत इलल्लाह का बहुत शौक़ था बल्कि जुनून की हद तक शौक़ था। उन्होंने भी यही लिखा है और ये बहुत सारे लोगों ने भी लिखा है सारे बयान भी नहीं हो सकते। यही लिखा है कि दावत इलल्लाह का बहुत शौक़ था और बड़े अहसन रंग में क़ुरआन करीम से दलीलें देकर दावत इलल्लाह किया करते थे

जलसा सालाना पर ग़ैर जमाअत लोगों को विशेष रूप से पर बुलाया करते थे और फिर उम्दा उम्दा खानों से उनकी दावत भी करते। जलसा उनको सुनवाते और यूं तब्लीग़ का सिलसिला भी खुल जाता। यह कहते हैं जब कोरोना महामारी आई तो मामू ने क्लीनिक जाना बंद नहीं किया। मैंने बड़ी बार फ़ोन कर के उन्हें बताया और समझाने की कोशिश की कि क्लीनिक न जाएं तो यही कहते थे कि अगर डाक्टर घर बैठ जाएं तो मरीज़ क्या करें और फिर दलीलें भी देते थे जिस पर मैं लाजवाब हो जाता था और बहुत बीमारी की हालत में भी क्लीनिक जाते थे और हमेशा यही कहा करते थे कि हम तो ख़िदमत के लिए यहां आते हैं। एक डयूटी है जो दे रहे हैं। क्लीनिक का मक़सद सिर्फ पैसा कमाना नहीं है

उनकी बेटी नौरीन आईशा नूरुद्दीन कहती हैं कि मेरे पिता जी एक निहायत शफ़ीक़ और मेहरबान और दुआ करने वाले बाप थे। हर मामला में हमेशा दुआ करने और अल्लाह तआला से अपना सम्बन्ध क़ायम करने की नसीहत करते थे। कहती हैं कि किसी भी हवाले से जब हम दुआ के लिए कहते तो यही कहते कि ख़ुद भी दुआ करो मैं भी करता हूँ। फिर अल्लाह तआला से रहनुमाई ले के हमें बताते कि मुझे ऐसी ख़्वाब आई है या इस तरह अल्लाह तआला ने बताया है। पेशे के लिहाज़ से हज़ारों की मसीहाई करते, हज़ारों का मुफ़्त इलाज और कफ़ालत करते। मरीज़ों से इतनी कम फ़ीस लेते कि अधिकतर ग़रीब ही आपके मरीज़ थे। फिर लिखती हैं कि मेरे पिता तो चलता फिरता क़ुरआन थे। किसी भी मामला के बारे में क़ुरआन से रहनुमाई चाहनी हो तो पहले ज़बानी आयत पढ़ते फिर अनुवाद बयान करते और समझाते। फिर ख़िलाफ़त से इतनी मुहब्बत थी कि जैसे ही एम.टी.ए पर एक घंटे का ख़ुत्बा आना शुरू हुआ तो फ़ौरी तौर पर घर पर डिश का प्रबन्ध किया ताकि एम.टी ए देखने के लिए लोग हमारे घर आएं और ख़िलाफ़त से इस मुहब्बत की वजह से जलसा सालाना के अवसर पर जो इख़ततामी ख़िताब होता है वह भी कई ग़ैर अहमदियों को बुला कर सुनवाते। सारी बैअत की कार्रवाई दिखाते। जलसे की कार्रवाई दिखाने के साथ साथ खाने का भी अच्छा इंतिज़ाम होता और कहते कि यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमान हैं।

फिर उनकी बेटी वरदा कहती हैं कि बचपन से ही हमें नमाज़, क़ुरआन, रोज़े रखने, वक़्त पर चंदे अदा करने और सदक़ा तथा ख़ैरात करने की आदत डाली। हम बहन भाइयों की शादी करते वक़्त सिर्फ और सिर्फ धर्म देखा। कभी दुनियावी चीज़ों की परवाह नहीं की और हम सबको बचपन से ही यह बात भी सिखाई कि हर इच्छा शीघ्र पूरी नहीं होती। इसलिए हमेशा सब्र और दुआ से काम लेना पड़ता है

अब्दुल क़ुद्दूस साहिब उनके दामाद हैं कहते हैं कि ख़ाकसार के साथ सुसर का सम्बन्ध एक बाप जैसा था और कहते हैं कि मुझे हमेशा इसलिए उनसे मिलने का शौक रहता कि कोई नई बात, किसी आयत की व्याख्या या कोई वैचारिक मतभेद एक नए पहलू से सीखने को मिलेगा। कहते हैं कि मैं शादी के शुरू दिनों में ससुराल में बे-तकल्लुफ़ नहीं था, हिचकिचाता था। उन्होंने अपनी ऐसी अपनाईयत दिखाई कि हिचकिचाहट दूर हो गई। फिर लिखते हैं कि उन्हें दुनियावी मामलों में, सियासत में या किसी फ़ैशन और ज़माने के रुझान में कोई दिलचस्पी नहीं थी। इबादत, क़ुरआन, दीनी उलूम और अख़लाक़ीयात ही केवल उनके पसंदीदा विषय होते थे। बिदअतों के ख़िलाफ़ एक ऐसी चट्टान थे जिसको कोई हिला नहीं सकता था। शादी इत्यादि के अवसर पर उन्होंने बद रस्मों को सख़्ती से रोका। अगर बच्चियां कोई गीत गा लेती थीं जिससे किसी को शिर्क का शाइबा ही होता तो फ़ौरन उसे रोकते और बड़ी

सख़्ती से रोकते।

इसी तरह उनकी बेटी कुर्रतुल ऐन हादिया कहती हैं कि उन्होंने मुझे नसीहत की कि कभी किसी के ख़िलाफ़ दिल में बात न रखना। अपने ससुराल वालों को अपना समझना। किसी को अपनी ज़बान से या व्यवहार से तकलीफ़ न देना। और फिर उन्होंने यह भी बेटी को कहा कि अपने किसी अच्छे के साथ अच्छा होना तो कोई कमाल की बात नहीं है। असल बात तो यह है कि बुरे के साथ भी अच्छा सुलूक करो और यह वह शिक्षा है जो इस्लाम की शिक्षा है और जिस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें इस ज़माना में बताया कि यही चीज़ है, यही वह उच्च अख़लाक़ हैं जो आजकल दूसरों को तुम्हारी तरफ़ खींचने के लिए मुतवज्जा करेंगे। तुम्हारी तरफ़ ध्यान दिलाएंगे और खींचेंगे। फिर कहती हैं उन्होंने कहा कि फ़साद क़त्ल से बड़ा गुनाह है इसलिए फ़साद को रोकने के लिए सच्चे हो कर झूठे की तरह विनम्रता धारण करो। यह भी वह उच्च नसीहत है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें फ़रमाई और यही वह नसीहत है जो माता पिता अगर बच्चों को करते रहें तो एक सुन्दर परिवेश क़ायम हो सकता है

आपके बेटे पीर मुहयुद्दीन साहिब कहते हैं कि मैंने ख़्वाब में देखा कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-राबे हमारे घर के लाऊंज में बैठे दर्स दे रहे हैं। मैं भी वहीं बैठा हुआ हूँ और मुझ से मुख़ातिब हो कर उन्होंने फ़रमाया कि यह घर नहीं दर है। इस से तुम्हें फ़ैज़ मिलता है। इस दर को कभी न छोड़ना और मुझे मुख़ातब हो कर कहा कि तुम्हारा बाप वली उल्लाह है। और फिर कहा यक़ीन रखो तुम्हारा बाप वली उल्लाह है।

ग़रीबों का बहुत दर्द रखते थे। बहुत सारे ख़ानदानों का सामिक राशन और बच्चों की शिक्षा, दवाइयां और इलाज की ज़िम्मेदारी ले रखी थी। रोज़ाना पच्चास फ़ीसद से ज़्यादा मरीज़ों को मुफ़्त देखते थे।

इसी तरह उनके दामाद अब्दुस्समद साहिब वर्णन करते हैं कि क़ुरआन करीम से बे-इंतिहा मुहब्बत थी और जब कोई हवाला देना होता तो आयत ज़रूर पढ़ते। फिर उस का अनुवाद पेश करते। ग़ैर अहमदियों से बातों में जब कोई कहता कि मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद का कोई निशान या चमत्कार दिखाओ तो कहते थे कि मैं चमत्कार हूँ। आप एक मुकम्मल अहमदी थे। जो उम्मीद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अपनी जमाअत से थी उस के वह सही मिस्दाक़ थे। उनकी शख़्सियत में यह बात मौजूद थी कि जो उनसे मिलता था उस की तबीयत में नेकी का रुझान पैदा हो जाता था। यही एक नेक आदमी का गुण है कि इस के साथ बैठने वाले भी नेक होते हैं और फिर यही नहीं है कि कई दलीलों से कह दिया कि मैं निशान हूँ। बल्कि जब ग़ैर अहमदी कई बार मज़ाक़ समझते कि यह मज़ाक़ कर रहे हैं तो कहते कि मज़ाक़ नहीं कर रहा बल्कि हक़ीक़त है और तर्कों से दूसरों को क़ाइल करते थे कि एक अहमदी होने की हैसियत से और बहुत सारे अहमदी जो सही शिक्षा पर अमल कर रहे हैं वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सदाक़त का एक ज़िन्दा निशान और चमत्कार हैं। अत: यह है वह स्तर जो हर अहमदी को अपनाने की कोशिश करनी चाहिए कि बजाय पुराने निशानों को तलाश करने के ख़ुद एक मिसाल बनें।

इसी तरह अब्दुल रऊफ़ साहब इस्लामाबाद के नायब अमीर हैं। वह कहते हैं कि कई लोगों ने इस बात का इज़हार किया कि हम तो किसी और डाक्टर को जानते ही नहीं। अब हम क्या करेंगे। कई जमाअत के ऐसे ग़रीब दोस्त हैं जिन को कभी इलाज का मसला नहीं हुआ। बग़ैर सोचे समझे वह डाक्टर नक़ी साहिब के क्लीनिक पहुंच जाते थे, वहां से इलाज करवाते थे। बहुत से ग़ैर अहमदी दोस्तों ने भी इज़हार किया है कि वह हमारे घर के बड़े थे। हम उनसे मश्वरा किए बिना कभी कुछ करते ही नहीं थे। सिर्फ अहमदी ही नहीं ग़ैर अहमदी भी उनसे मश्वरा करते थे। कई ग़ैर अहमदी, ग़ैर अज़ जमाअत फ़ैमिलीज़ जो हैं उनके घरेलू झगड़े और मामले भी डाक्टर साहिब हल करते क्योंकि जिस जगह उनका क्लीनिक है वहां लगभग चालीस साल से अधिक समय से उनका क्लीनिक क़ायम है और पहले बाप आता था फिर उस के बच्चे आना शुरू हो गए। कहते हैं डाक्टर साहिब ने कई लोगों की घटनाएं मुझे सुनाईं। कई ग़ैर अहमदी अपने बच्चों को नसीहत कर के फ़ौत होते थे कि अपने किसी मतभेद या झगड़े के वक़्त डाक्टर नक़ी से मश्वरा करना।

फिर यह लिखते हैं कि पिछले साल 2019 ई में जून के आख़िरी जुमा को डाक्टर साहिब जुमा की नमाज़ के बाद मेरे दफ़्तर में आए और दरवाज़ा बंद कर के कहने लगे कि तुम्हें एक बात सुनानी है और यह सिर्फ़ मेरी बीवी को मालूम है। कहते हैं चार दिन पहले मैं ने ख़्वाब में देखा कि मैदान जंग है जहां लाशें बिखरी पड़ी हैं। वहां खड़ा हूँ कि मैं इन शहीद होने वालों में क्यों शुमार नहीं हुआ तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की आवाज़ आती है कि जिसको पाँच ज़ख़्म लगेंगे वह शहीद होगा। कहते हैं मैंने पीछे मुड़ कर देखा तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक ऊंची जगह पर एक फ़ौजी कमांडर की तरह खड़े हैं। डाक्टर साहिब कहते हैं कि मैंने अपने ज़ख़्म गिनने शुरू किए। तीन ज़ख़्म बहुत गहरे थे और एक टांग पर बहुत हल्की ख़राशें थीं। मैंने बहुत ज़्यादा इस्तिग़फ़ार करना शुरू कर दिया। इस के बाद आँख खुल गई और मैं सोच रहा था कि इस का क्या मतलब होगा। कहते हैं मेरे दिल में बहुत ज़ोर से चंदे का ख़्याल डाला गया उस का हिसाब करना चाहिए। कहते हैं कि मेरे से सुस्ती हुई। अगले दिन सुबह की नमाज़ के लिए जब मैं उठा तो मेरे दिल में बहुत सख़्ती से ख़्याल आया कि मैंने अभी तक हिसाब नहीं किया। कहते हैं मैंने जा कर सुबह अपना हिसाब किया तो वाक़ई कुछ रक़म हिसाब के बिना थी। कहते हैं आज उन्होंने दस लाख का चैक सैक्रेटरी साहिब माल को दे दिया और कहते हैं कि मैं इस दिन से बहुत इस्तिग़फ़ार कर रहा हूँ।

अज़ीज़ुर्रहमान साहिब, मुजीबुर्रहमान साहिब ऐडवोकेट के बेटे उनके भांजे हैं। कहते हैं कि कई बार उनसे उनके बचपन और ज़िन्दगी की घटनाएं सुनीं। इंतिहाई विपरीत परिस्थितियों में ख़ुदा के फ़ज़ल और माता पिता की दुआओं के साथ डाक्टर बने। बताया करते थे कि उन्होंने ऐसा वक़्त भी देखा है कि काम करने के लिए काग़ज़ ख़रीदने के लिए रक़म नहीं होती थी तो इस्तिमाल किए गए लिफ़ाफ़े जमा कर के उनको खोल कर उन पर नोटिस इत्यादि बनाया करते थे। इसी तरह गांव में जब स्कूल में पढ़ते थे तो हिसाब का टीचर नहीं था तो दूसरे गांव में जा के वहां के हिसाब के उस्ताद से हिसाब सीखते थे। फिर अपने गांव में आ के अपने बच्चों को , अपनी क्लास के लड़कों को पढ़ाया करते थे

नमाज़ की पाबन्दी की आदत की घटना उन्होंने बयान की कि जब छोटे थे तो एक रोज़ यह और उनकी बहन खेलते खेलते इशा की नमाज़ अदा किए बिना सो गए। किस तरह उनको पाबंदी नमाज़ की आदत पड़ी उस की यह घटना दिलचस्प है। कहते हैं जब माता ने पूछा कि नमाज़ पढ़ ली है। बच्चे थे सो गए थे। तो उन्होंने सोए सोए कह दिया कि हाँ पढ़ ली है। कहते हैं कि आधी रात को माता ने आकर उठाया और वह डाक्टर साहिब की माता रो रही थीं कि तुम ने मुझसे नमाज़ के बारे में झूठ बोला है कि तुम ने पढ़ ली है। ख़ुदा तआला ने कश्फ़ में बता दिया था कि नमाज़ नहीं पढ़ी। कहते हैं इस दिन के बाद से फिर हम ने कभी नमाज़ नहीं छोड़ी। तो यह था और यह अहमदी माताओं का स्थान होना भी चाहिए। बच्चों की तरबियत की, नमाज़ों की फ़िक्र थी और इस के लिए दुआ करती थीं और जब दिल की गहराई से दुआ की तो फिर अल्लाह तआला ने उनको नज़ारा भी दिखा दिया कि अच्छा तो फिर सही सूरत यह है कि तुम्हारे बच्चों ने नमाज़ नहीं पढ़ी उनको उठाओ और फिर रोते हुए उन्होंने अपने बच्चों को जगाया। जिसका इतना असर हुआ कि कहते हैं फिर सारी ज़िन्दगी हमने कभी नमाज़ नहीं छोड़ी। अक्सर बातों का हवाला क़ुरआन करीम ही से पेश किया करते थे। कहा करते थे कि अगर ख़ुदा से ज़िन्दा सम्बन्ध पैदा न हो तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत का हक़ अदा नहीं होता क्योंकि हुज़ूर अलैहिस्सलाम की बेअसत का मक़सद ही ख़ुदा तआला से ज़िन्दा सम्बन्ध पैदा करना था।

इसी तरह डाक्टर अताउर्रहमान साहिब उनके भांजे हैं यह कहते हैं क़ुरआन करीम पर तदब्बुर करते रहते और क़ुरआन करीम का गहरा इलम रखते थे। अक्सर लंबी लंबी आयतें ज़बानी याद थीं। पाकिस्तान के आजकल के हालात के बावजूद कट्टर मुख़ालिफ़ीन को घर पर दावत देकर जलसा सालाना की कार्रवाई और ख़ुत्बे सुनवाते थे। आपकी तब्लीग़ से अक्सर लोग प्रभावित होते और अल्लाह के फ़ज़्ल से कई बैअतें भी आपके माध्यम से हुईं। अल्लाह तआला मरहूम के दर्जात फ़रमाए।

अगला ज़िक्र जो है वह आदरणीय ग़ुलाम मुस्तफ़ा साहिब का है जो यहां लंदन में रहते थे। फिर यहां टेलफ़ोर्ड में आ गए। दफ़्तर प्राईवेट सैक्रेटरी के यहां यू.के में रज़ाकार कारकुन थे। उनकी 25 अप्रैल को 69 साल की उम्र में वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन।

1983 ई में ख़िलाफ़त राबिया के दौर में उन्होंने बैअत की थी और 1986 ई में यह लन्दन आए और मस्जिद में ठहरे तो आते ही वक़्फ़ की दरख़ास्त की। क्योंकि शिक्षा उनकी बहुत मामूली थी। इस वजह से शायद वक़्फ़ तो मंज़ूर नहीं हुआ लेकिन एक वाकिफ ज़िन्दगी की तरह यह पहले तो किचन में और फिर दफ़्तर में काम करते रहे। यहां तक कि जब अल्लाह तआला ने फ़ज़्ल फ़रमाया और उनका कारोबार भी वसीअ कर दिया। ख़ाली हाथ आए थे लेकिन फिर अल्लाह तआला ने ऐसी बरकत डाली कि कुछ प्रॉपर्टी ख़रीदने की तौफ़ीक़ मिली। फिर इस से आगे प्रॉपर्टी बनाने की तौफ़ीक़ मिली और इस तरह अल्लाह तआला ने बरकत डाली जिसको उन्होंने

ग़रीबों पर भी ख़र्च किया, जमाअत पर भी ख़र्च किया लेकिन मैं कह रहा था कि यह वक़्फ़ ज़िन्दगी की हैसियत से इस तरह रहे। पहले ख़िलाफ़त राबिया में भी उनका यही तरीक़ा होगा मेरे वक़्त में भी ये रहा कि जब भी दफ़्तर से कारोबारी सिलसिले में अगर कहीं जाते थे, दूसरे देश जाना होता था या वैसे लंबी छुट्टी करनी होती। कुछ अरसा दफ़्तर न आना होता था तो बाक़ायदा रुख़स्त लेते थे कि मुझे रुख़स्त चाहिए क्योंकि मैं अमुक जगह जा रहा हूँ और एक वाक़िफ़ ज़िन्दगी की तरह उन्होंने काम किया और कहा करते थे कि वक़्फ़ तो नहीं लेकिन में अपने आपको वाक़िफ़ ज़िन्दगी समझता हूँ। बहरहाल बड़ी वफ़ा के साथ उन्होंने अपने से जो यह एक अहद किया था और अल्लाह से जो वक़्फ़ ज़िन्दगी का अहद किया था इस को उन्होंने पूरा किया चाहे बाक़ायदा वक़्फ़ में थे या न थे।

मस्जिद में रिहायश के वक़्त उनको किसी ने शुरू में होटल में नौकरी करने के लिए भेजा। वहां उनको वेटर के तौर पर काम मिला। उनको यह नौकरी अच्छी नहीं लगी। अत: अगले दिन वह काम छोड़ के आ गए और कहते हैं कि मैंने सोचा कि जब मुझे बिना किसी काम के पैसे भी मिल रहे हैं तो इस काम से बेहतर है कि मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के लंगर के बर्तन धो लूं और फिर वली शाह साहिब के साथ मस्जिद फ़ज़ल के किचन में काम शुरू कर दिया। फिर हिफ़ाज़त ख़ास में भी कुछ समय डयूटियाँ देते रहे। 1993 ई में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-राबे ने पी ऐस ऑफ़िस में उन्हें डयूटी दी और इस वक़्त से लेकर अब तक जैसा कि मैं ने कहा बड़ी ख़ुश-उस्लूबी से यह अपनी डयूटी सरअंजाम देते रहे। मरहूम मूसी थे। उनके पीछे रहने वालों में में पत्नी के इलावा दो बेटियां और एक बेटा शामिल हैं

उनकी पत्नी महमूदा मुस्तफ़ा साहिबा लिखती हैं कि मेरा और मुस्तफ़ा साहिब का लगभग 34 साल साथ रहा है और मैं इन सालों की गवाही दे सकती हूँ कि उनका हर क़दम ख़ुदा तआला के लिए होता था। बे शुमार गुणों के मालिक थे। एक मुख़लिस शौहर, बाप, भाई और दोस्त थे। अपने रिश्तों को निभाने वाले, बहुत दूर-अँदेश, हर एक के काम आने वाले, बेलौस ख़िदमत करने वाले, बहादुर और निडर इन्सान थे। ख़िलाफ़त पर मर मिटने वाले वजूद थे। कहते थे कि जब मैंने पाकिस्तान में बैअत की तो अपने साथ वादा किया था कि मैंने हमेशा ख़िलाफ़त के नज़दीक रहना है। इस वक़्त उनके पास कोई संसाधन नहीं थे लेकिन उन्होंने ख़ुदा तआला के फ़ज़ल से वह वादा पूरा किया। अल्लाह तआला ने सामान भी उपलब्ध फ़र्मा दिए। माली क़ुर्बानी का बहुत शौक़ था। कहती हैं कि मुझे याद है कि मेरा बेटा पैदा हुआ तो मैंने उनसे कहा कि मैंने सोचा है कि मैं अपना आधा ज़ेवर जमाअत को दे दूं तो फ़ौरन जवाब दिया कि आधा क्यों देती हो पूरा दो। कहती हैं शुरू की बात है कि अफ़्रीक़ा के लिए मस्जिदें बनाने की तहरीक हुई तो उस वक़्त अपने पास घर भी नहीं था लेकिन जो भी पैसे जमा होते थे वे मस्जिदों के चंदे में दे देते थे और अपनी ज़ात पर वह कंजूसी की हद तक ख़र्च करते थे लेकिन दूसरों पर ख़र्च करने से पहले कभी सोचते भी नहीं थे। हमेशा जहां धर्म को प्राथमिकता दी वहां एक सच्चे मोमिन की तरह धर्म और दुनिया दोनों कमाई। हर काम में मुझे साथ रखा ताकि मुझे हर चीज़ का पता हो और हमेशा मुझ पर पूरा भरोसा किया। फिर कहती हैं कि मुस्तफ़ा साहिब अपनी फ़ैमिली में अकेले अहमदी थे। जब उन्होंने बैअत की तो अपने साथ यह वादा किया कि अपने पिता की विरासत से कुछ नहीं लेना और दुआ की कि अल्लाह! अगर तेरा मसीह सच्चा है और मैंने सच्चा समझ के बैअत की है तो मुझे अपनी तरफ से देना और किसी का मुहताज न करना। अल्लाह तआला ने उनकी यह इच्छा पूरी फ़रमाई और साबित कर दिया कि तुम ने जो बैअत का क़दम उठाया है वह वास्तव में सच है और फिर अल्लाह तआला ने बड़े विभिन्न तरीक़ों से उनकी मदद भी की। अपने गांव में फिर उन्होंने बड़ी मस्जिद भी बनवाई कि कभी न कभी तो ये लोग अहमदी होंगे और इस के इलावा विभिन्न तरीक़ों से अपने रिश्तेदारों की, बहन भाइयों की ख़ुद मदद करते रहे। उनकी पत्नी कहती हैं उनको अपनी दुआओं की क़बूलीयत पर भी बड़ा कामिल यक़ीन था। और इस के बेशुमार घटनाएं उन्होंने आगे वर्णन हैं।

उनकी बेटी सबीहा मुस्तफ़ा कहती हैं कि मेरे वालिद की ज़िन्दगी का मक़सद अल्लाह तआला की ज़ात और इस के क़ायम किए गए निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त से मुहब्बत करना था। अल्लाह तआला पर कामिल दर्जा तवक्कुल था। हमें अक्सर बताया करते थे कि मैं ने अवसर पर यह दुआ की जो इस तरह पूरी हुई। आपकी हमेशा यह कोशिश होती कि कहीं से ख़लीफ़तुल मसीह का तबर्रुक मिल जाए और कहीं से तबर्रुक मिल जाता तो इस में से अपना हिस्सा ज़रूर महफ़ूज़ कर लेते और फिर थोड़ा थोड़ा कर के लोगों में बांटा करते ताकि वह भी इस से लाभान्वित हों। तबर्रुक को घर में भी इस नीयत से जमा करते ताकि जलसे के मेहमानों को भी इस में से कुछ हिस्सा दे सकें। कहती हैं कि अब्बू के ,मेरे पिता जी के बहुत सारे वाक़िफ़ कारों ने मुझे फ़ोन कर के कहा कि हमें ऐसा महसूस हो रहा है कि हम एक-बार फिर यतीम हो गए हैं। ग़रीबों की मदद भी बहुत ज़्यादा करते थे। कहती हैं जब हम वहां लन्दन में थे और टूटिंग से ग्रेसन हाल रोड स्थानान्तरित हुए तो अब्बू की कोशिश थी कि जल्दी कोई बड़ा घर मिल जाये ताकि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की भरपूर रंग में ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिले और हमेशा कहते थे कि घर लेना है तो ख़िलाफ़त के साय में लेना है। यहां से दूर कभी नहीं जाना। कहती हैं मेरे पिता जी निहायत इख़लास के साथ हर एक की मदद करते थे। कोई दुख या तकलीफ़ में पीड़ित होता तो इस की बेहतरी के लिए हर मुम्किन कोशिश करते। अपनी बीमारी के दिनों से पहले उन्होंने मुझे आख़िरी नसीहत की कि हमेशा जमाअत के साथ जुड़े रहना, नमाज़ें पढ़ना और क़ुरआन की तिलावत बाक़ायदगी से करते रहना तो अल्लाह हमेशा साथ देगा।

उनकी दूसरी बेटी हैं। पहले तो छोटी बेटी का ज़िक्र था। बड़ी बेटी मदीहा मुस्तफ़ा कहती हैं कि बेशक मेरे पिता एक गांव से आए थे, ज़्यादा पढ़े लिखे नहीं थे लेकिन उनके विचार, दूर अंदेशी और ज़िन्दगी के उसूल उनको बहुत पढ़े लिखे लोगों से भी आगे ले गए। आज की दुनिया में बहुत कम लोग ऐसे देखे हैं जो सच्चे अर्थों में मर्द और औरत को बराबरी का स्थान देते हैं। उन्होंने बेटियों को कभी बोझ नहीं समझा बल्कि अक्सर कहते थे कि जिसकी बेटी हो गई वो पार हो गया और इस के काम के दिन ख़त्म हो गए और आराम के दिन शुरू हो गए। कहती हैं अपने बेटे और बेटियों की बराबर शिक्षा व तर्बीयत का फ़र्ज़ बख़ूबी निभाया। इस में कोई कसर नहीं छोड़ी लेकिन इस के साथ उन्होंने औलाद से मुहब्बत के बावजूद कभी हुक़ूक़ुल्लाह और हुक़ूक़ुल ईबाद को पीछे नहीं छोड़ा। ईद हो या बेटी की शादी हो या कोई और काम हो उन्होंने कभी नमाज़ को नहीं छोड़ा। ख़ुदा पर भरोसा था। वह जानते थे कोई काम पीछे नहीं रहेगा लेकिन अगर फ़िक्र थी तो इस बात की थी कि इबादत की कमी की वजह से ख़ुदा की कोई नाराज़गी न आ जाए।

उनके बेटे सरफ़राज़ महमूद कहते हैं कि जब हम टूटिंग में रहा करते थे तो उस वक़्त भी बाक़ायदगी से नमाज़ पढ़ने के लिए मस्जिद फ़ज़ल जाते थे। कभी कोई नमाज़ मस्जिद में अदा न कर सकते तो इस बात को यक़ीनी बनाते कि हम सब मिलकर घर में बाजमाअत नमाज़ अदा करें। कहते हैं मुझे कहते थे कि ज़िन्दगी में तुम जो चीज़ हासिल करना चाहो सिर्फ एक अल्लाह की ज़ात ही है जो उसे पूरा कर सकती है। अगर नमाज़ का वक़्त होता तो बाक़ी हर काम छोड़कर पहले नमाज़ अदा करते। फिर यह बेटा कहता है कि पंद्रह साल की उम्र तक मुझे बाक़ायदगी से अपने साथ फ़ज्र की नमाज़ पर लाया करते थे। फिर कहता है उनकी दुआएं ही थीं जिनकी बरकतें हमें हासिल हो रही हैं। और जब मस्जिद से फ़ज्र की नमाज़ के बाद आते तो जायज़ा लेते कि मैं मस्जिद गया हूँ कि नहीं। अगर कभी सुस्ती हो जाती तो कहते कि अल्लाह तआला से बेवफ़ाई करने में तुम्हारा ही नुक़्सान है। अल्लाह को तुम्हारी नमाज़ों की ज़रूरत नहीं। हर इन्सान अपने लिए नमाज़ पढ़ता है। कहते हैं कि बीमारी की वजह से हम ने एम्बूलैंस बुलवाई तो उस वक़्त बड़ी भारी आवाज़ में सांस ले रहे थे लेकिन इस वक़्त भी लेटने या बैठने की बजाय खड़े हो कर नमाज़ अदा कर रहे थे और कहते हैं कि हस्पताल जाते हुए जब सीढ़ियां उतर रहे थे तो बार-बार यही कहा कि नमाज़ को बाजमाअत ,हमेशा जमाअत के साथ और वक़्त पर अदा करना।

फिर मेहमान नवाज़ी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की। बड़ा घर था तो वहां चालीस के क़रीब जलसा के मेहमान होते थे। यहां जब मस्जिद के क़रीब आए तो छोटा घर था तो वहां भी पच्चीस के क़रीब लोग समाते थे। इस घर में भी पच्चीस मेहमानों का समाना एक बड़ा मुश्किल काम है लेकिन बहरहाल बड़ी ख़ुशी से करते थे। मैं ने भी उनसे कई बार पूछा तो उन्होंने कहा कि बस हम अपना गुज़ारा कर लेते हैं और घर मेहमानों को दे देते हैं। हमेशा कहते थे कि धर्म और दुनिया दोनों को साथ लेकर आगे बढ़ना है लेकिन ये याद रखो कि यह काम आसान नहीं है। जब भी कोई दुनियावी मामला सामने आए तो धर्म को हमेशा दुनिया पर मुक़द्दम रखना। यही हमेशा उन्होंने बच्चों को नसीहत की। कहते हैं मुझे हमेशा यह नसीहत की कि हमारा सब कुछ अल्लाह की जमाअत की अमानत है इसलिए हमारा काम है कि हम उस की हिफ़ाज़त करें और इस अमानत को इस नीयत से बढ़ाएं कि यह जमाअत के काम आ सके। हमेशा नसीहत करते कि चंदे की अदायगी में कभी देरी नहीं करनी और ख़ुद महीने के पहले दिन ही अपना चंदा अदा कर देते थे और कहते थे कि यह मत सोचना कि जमाअत को हमारे चंदे की ज़रूरत है बल्कि

चंदा देने से हम अल्लाह तआला की नेअमतों को जज़ब कर सकते हैं। कहते हैं कि बीमारी के आख़िरी दिनों में जब वेंटीलेटर लगाया गया तो क़ौमा में जाने से पहले, फिर बाद में क़ौमा में चले गए थे, आख़िरी शब्द जो उन्होंने मुझ से कहे वह यही थे कि सरफ़राज़ मैं जानता हूँ कि महीने का पहला दिन गुज़र गया है। मेरी अलमारी में जा कर देखो वहां तमाम फाइलें मौजूद हैं, मेरे चंदे का हिसाब किताब लिखा हुआ है मेरा पूरा चंदा अदा कर दो और मेरी नसीहत हमेशा याद रखना कि हर महीने के पहले रोज़ अपना सारा चंदा अदा करना और इस में कभी देरी न करना।

उनके सुसर करामतुल्लाह साहिब कहते हैं कि अज़ीज़म मुस्तफ़ा ने अपनी बीवी के रहमी रिश्तों को बड़े ख़ुलूस से निभाया और ख़ाकसार को अपने हक़ीक़ी पिता का दर्जा दिया। मुस्तफ़ा ने सारी ज़िन्दगी ख़ुदा तआला की इबादत और ख़िलाफ़त के क़दमों में ख़िदमत करते हुए गुज़ार दी।

इसी तरह बिलाल उनके दामाद हैं वह कहते हैं विभिन्न कुरआन की दुआएं और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इर्शादात की फ़ोटो कापियां हासिल करके मुझे भी और अपने बाक़ी बच्चों, दोस्तों और रिश्तेदारों को दिया करते थे कि इस को पढ़ो और कुरआन की दुआओं को याद करो। कहते हैं मैंने देखा कि मस्जिद फ़ज़ल में जो दर्स होता था उस की कापी हासिल कर के इस को घर आकर दुबारा पढ़ते थे और सबको पढ़ने के लिए देते और मोबाइल फ़ोन से इस की तस्वीर बना कर अपने दूसरे ग़ैर अहमदी बहन भाइयों और उनके बच्चों को भी भेजा करते थे और इस के बाद उनको फ़ोन कर के पूछा करते थे कि उन्होंने पढ़ा है या नहीं और फिर यूं तब्लीग़ करते रहते थे। बहुत मेहमान नवाज़ थे। आम दिनों में लगभग हर-रोज़ किसी न किसी को बतौर मेहमान घर ले आते और जलसा के दिनों में तो चौबीस घंटे मेहमानों का आना-जाना रहता और हर एक को यही कहा करते थे कि पूछने की ज़रूरत कोई नहीं है। अपना घर समझो और आ जाया करो।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के मेहमानों को तो आप खासतौर पर बहुत प्राथमिकता देते थे। कहते थे हरवक़त मेरे दरवाज़े खुले हैं। अगर कोई एक-बार उनके घर ठहरने के लिए जलसा पर आ जाता और अगले साल कहीं और क़ियाम होता तो बड़े परेशान होते कि शायद मेरे से कोई कोताही हो गई है। मेहमान-नवाज़ी में कमी हो गई है जिसकी वजह से वह नहीं आया। फिर अगर मौक़ा मिलता तो ज़बरदस्ती उसे अपने घर ले भी आते। अपने बाक़ी दुनियावी कामों और कारोबार को तरह manage कर रखा था कि नमाज़ के वक़्त में भी रुकावट ना बनें। कामों को छोड़कर मस्जिद पहुंच जाया करते थे

इसी तरह उनके साले सुहैल अहमद साहिब चौधरी हैं। कहते हैं कि ऐसे वजूद थे जिन्हें तीन चीज़ों का जुनून की हद तक शौक़ था। एक इबादत, दूसरा ख़िलाफ़त से सम्बन्ध और तीसरा मेहमान नवाज़ी। मुस्तफ़ा भाई का घर जलसा के दिनों में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों से भरा एक सराय का मन्ज़र पेश करता था

असलम ख़ालिद साहिब हमारे प्राईवेट सैक्रेटरी के कारकुन हैं वह कहते हैं कि हमारे दफ़्तर में आपसे रोज़ का सम्बन्ध था। बड़ी ख़ूबियों के मालिक थे। निडर, नेकियों में आगे बढ़ने वाले, ग़रीबों का ध्यान रखने वाले, मेहमान नवाज़, चंदों में बेमिसाल। हर नेक काम की तलाश रखते। दफ़्तर में हर बंदे से काम हरीसों की तरह छीन कर ख़ुद करने के मुश्ताक़ रहते। कहा करते थे कि यही मेरी कमाई है और कहते थे अब यही सही काम है और तब ख़ुश होते थे

फ़हीम अहमद भट्टी साहिब भी कारकुन प्राइवेट सैक्रेटरी हैं। यह वालंटेयर हैं। यह भी कहते हैं कि शायद 1992 ई से दफ़्तर में काम करना शुरू किया। इन दिनों स्टाफ़ की कमी थी। बड़ी बाक़ायदगी से काम करते। एक वफ़ादार और जान कुरबान करने वाले कारकुन थे। बहुत सारी ख़ूबियों के मालिक थे जिनमें सबसे ज़्यादा नुमायां प्यारी और रशक योग्य ख़ूबी ख़िलाफ़त के साथ दिली प्यार, इताअत व फ़रमांबर्दारी और छोटी छोटी बातों पर रहनुमाई लेना थी। अल्लाह तआला ने उन्हें माली आराम प्रदान फ़रमाया थी। जब भी इस का वर्णन करते, हमेशा कहते कि इस दफ़्तर में काम करने और इस दर की बरकत से मुझे सब कुछ मिला है

डाक्टर तारिक़ बाजवा साहिब कहते हैं कि मेरा दोस्ती का सम्बन्ध1981 ई 1980 ई से था और अहमदियत स्वीकार करने से लेकर वफ़ात तक उन्हें बहुत क़रीब से देखने का अवसर मिला। बेशुमार ख़ूबियों के मालिक, अल्लाह पर भरोसा करने वाले और ख़िलाफ़त के आशिक़ थे। सिन्ध आकर अपने एक दूर के रिश्तेदार के पास रहने लग गए क्योंकि वहां पंजाब में ज़मीन पर इन पर कुछ मुक़द्दमे हो गए थे। वहां से यह पुलिस से बच के आ गए थे। बहरहाल वहां उनका अहमदियत से परिचय हुआ और निरन्तर तीन साल तक उनसे तब्लीग़ का सिलसिला चलता रहा। इस दौरान भी यह वहां अहमदियों की मस्जिद में बाक़ायदगी से अज़ान देते रहे जिसका उन्हें शुरू से शौक़ था। आख़िर में उन्होंने एक ख़्वाब देखने के बाद फ़ौरी तौर पर बैअत की। वह ख़्वाब यह थी कि घर में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस तशरीफ़ लाते हैं और मुस्कुराते हुए कहते हैं कि दो ख़ुद्दाम की ज़रूरत है और फिर सलीम साहिब और उनकी तरफ़,मुस्तफ़ा साहिब की तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमाते हैं कि एक तुम आ जाओ और एक तुम और फिर उस के बाद उन्होंने बैअत कर ली। बैअत से पहले ही जमाअत के इज्तिमा इत्यादि में शामिल होते थे। बैअत के बाद इख़लास में बहुत तरक़्क़ी की। ध्यान से ख़ुत्बे और सवाल व जवाब सुनकर उनमें इतना भरोसा आ गया था कि कहते थे मैं ख़ुद ही ग़ैर अहमदी मौलवियों के लिए काफ़ी हूँ। मेरे सामने कोई नहीं ठहर सकता। कई बार उन्हें उमरा करने की तौफ़ीक़ मिली और फिर अल्लाह तआला ने उनको 2010 ई में हज का भी सौभाग्य प्रदान किया। कादियान से भी मुहब्बत थी। अक्सर वहां पहले जाते थे। मर्कज़ में मकान की इच्छा थी फिर वहां मकान बनवाया और फिर जमाअत को पेश कर दिया।

डाक्टर इब्राहीम नासिर भट्टी साहिब जो उनका इलाज कर रहे थे कहते हैं कि मैं ग़ुलाम मुस्तफ़ा साहिब को ज़्यादा समय से नहीं जानता। आख़री बीमारी के दौरान बहैसीयत कन्सलटैंट उनकी देखभाल का अवसर मिला। संयोग से यह वहां हस्पताल में डाक्टर थे और मुस्तफ़ा साहिब उनके मरीज़ बन गए। कहते हैं उनको आख़िरी बीमारी में देखने का अवसर मिला। इस मामूली से समय में कुछ ऐसी बातें हैं जो मैंने नोट की हैं और जो वर्णन योग्य हैं। कहते हैं कोरोनावाइरस की बीमारी की शिद्दत के कारण आप हमेशा निहायत दृढ़ तौर पर अल्लाह तआला की रज़ा पर राज़ी थे। मुझे याद है कि मैं उनके पास आया और उनसे मुख़ातिब हो कर कहने लगा कि बीमारी की शिद्दत की वजह से शायद ठीक होना मुम्किन न हो। ये सुनकर मुस्तफ़ा साहिब कुछ देर ख़ामोश रहे। फिर कहा कि अल्लाह जो चाहे मैं इसी पर राज़ी हूँ। आपके चेहरे पर ग़म और फ़िक्र की कोई निशानी नहीं थी। निहायत सन्तुषट थे। फिर डाक्टर साहिब कहते हैं दूसरा उदाहरण जिसने मुझे बहुत प्रभावित किया वह ख़िलाफ़त से मुहब्बत थी कि बीमारी की शिद्दत की वजह से हमें सी.पी.ए.सी लगाने की ज़रूरत पड़ती थी जो ऑक्सीजन पहुंचाने के लिए एक बहुत सख़्त मशीन है जो इन्सान को कई बार बेक़रार कर देती है और तकलीफ़ की वजह से ख़ौफ़नाक हालत पैदा हो जाती है। मशीन लगाने की वजह से जब उन्हें तकलीफ़ महसूस होने लगती तो उनके घर वाले उन्हें मेरी तरफ़ से आकर कहते कि ख़लीफ़ा वक़्त का पैग़ाम है और कहते कि उन्होंने पैग़ाम दिया है कि डाक्टरों की हिदायत के अनुसार अनुकरण करें। जब उनको मेरा यह पैग़ाम मिलता तो अचानक रीलैक्स हो जाते और आराम से मशीन को बर्दाश्त करने लग जाते और ऐसा महसूस होता कि उनका हौसला बढ़ा है और जिस्म में एक दम जान आई है और इसी तरह कहते हैं कि मैंने देखा है कि होमियोपैथिक दवाई इसलिए नहीं खाते थे कि कोई लाभ होगा। सिर्फ इसलिए खाते कि उनको मैं ने यह नुस्ख़ा दिया था। डाक्टर साहिब कहते हैं ख़िलाफ़त से मुहब्बत और वफ़ा का एक ऐसा बेमिसाल सम्बन्ध है कि मैं इस से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका।

अल्लाह तआला इन तमाम मरहूमीन के दर्जात बुलंद फ़रमाए। जो वफ़ा उन्होंने ख़ुदा तआला और इस के धर्म के साथ की है और जिस तरह अपने अहद बैअत निभाने की कोशिश की है अल्लाह तआला इस से बढ़कर उनसे प्यार का सुलूक फ़रमाए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जैसा कि फ़रमाया था ये लोग शुहदा में शामिल हैं। अल्लाह तआला उनकी औलाद को भी अपनी हिफ़्ज़ तथा सुरक्षा में रखे और अल्लाह तआला उनकी नेकियां अपनाने और जारी रखने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। अल्लाह तआला से सम्बन्ध पैदा करने वाले हों और जमाअत और ख़िलाफ़त से हमेशा वफ़ा का सम्बन्ध रखने वाले हों और माता पिता ने उनके लिए जो दुआएं की हैं उनको अल्लाह तआला हमेशा उनके हक़ में स्वीकार फ़रमाता रहे।

(अल्फ़ज़ल इंटरनैश्नल लन्दन 22 मई 2020 ई पृष्ठ 5 से 10)


## अल्लाह तआला का उपदेश

رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (आले इम्रान 17)

**हे हमारे रब्ब निसन्देह हम ईमान ले आए**

**अतः हमारे गुनाह माफ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।**

**तालिबे दुआ**

**MUHAMMAD MAJEED AND FAMILY**

AMEER DIST: ROUPR. PUNJAB

पृष्ठ 2 का शेष

7 अक्तूबर 2015 ई को हुज़ूर अनवर ने अपने दौरा हॉलैंड के दौरान मस्जिद बैयतुल आफियत की नींव रखी। सितम्बर 2016 ई में नियमित उस की बनाने का काम शुरू हुआ। मस्जिद के लिए बनाए हुए हिस्सा का क्षेत्रफल 558 वर्ग मीटर है। यह मस्जिद दो मंज़िलों पर आधारित है। मीनार की ऊंचाई साढ़े अठारह मीटर है। मस्जिद का गुंबद बड़े साइज़ का है और फाइबर गिलास से तैय्यार किया गया है। यह गुंबद अहमदिया आर्केटिकट ऐंड इंजीनीयर्ज़ एसोसीएशन पाकिस्तान ने तैय्यार करके भिजवाया था

एक मल्टी परपज़ हाल भी बनाने किया गया है। मस्जिद और मल्टी परपज़ हाल को शामिल करके दो सौ से अधिक लोग नमाज़ अदा कर सकते हैं। मुरब्बी हाऊस का क्षेत्रफल 111 वर्ग मीटर है। इस में 3 बेडरूमज़ और सेटिंग रुम के अतिरिक्त किचन और 2 वाश रूमज़ शामिल हैं

मल्टी परपज़ हाल का क्षेत्रफल 52.5 वर्ग मीटर है। ग्रांऊड फ़्लोर पर स्थानीय जमाअत के लिए दफ़्तर, टेक्निकल क्षेत्र, जमाअती किचन, एक स्टोर और चार बाथरूम और वुज़ू के लिए स्थान बनाए गए हैं। इसी तरह लज्ना के हिस्सा में भी एक दफ़्तर और चार बाथरूम और वुज़ू के लिए स्थान बनाए गए हैं। मस्जिद के भीतरी क्षेत्र में पार्किंग के लिए भी स्थान बनाया गया है। इस मस्जिद के बनाने पर कुल ख़र्च लगभग 18 लाख 81 हज़ार यूरो हुआ है

मस्जिद के उद्घाटन के अवसर पर एक विशेष आयोजन का प्रबन्ध

मस्जिद के उद्घाटन के अवसर पर एक विशेष आयोजन का प्रबन्ध मस्जिद के बाहरी क्षेत्र में मर्दों और औरतों के लिए अलग अलग मार्की लगा कर किया गया था

आज के आयोजन इस दृष्टि से भी बहुत महत्त्वपूर्ण था कि से 64 साल पहले 1955 ई में हॉलैंड की धरती पर जमाअत की पहली मस्जिद "मस्जिद मुबारक" Den Haag मैं बनाई थी। और आज 64 साल बाद अलमेरे शहर में जमाअत अहमदिया हॉलैंड की नियमित दूसरी मस्जिद बन रही है और उस का उद्घाटन हो रहा था

हुज़ूर अनवर के आने से पहले समस्त मेहमान मार्की मैं अपने अपने स्थानो पर बैठे हुए थे। इस आयोजन में शामिल होने वाले मेहमानों की संख्या 85 के लगभग थी जिनमें Almere के डिप्टी मेयर, विभिन्न क्षेत्रों के कौंसिलरज़, हुकूमती संस्थाओं के प्रतिनिधि, पुलिस और सिक्योरिटी के प्रतिनिधि, चेयरमैन हिंदू कम्यूनिटी अलमेरे, सिख कम्यूनिटी के रहनुमा, Jewish कम्यूनिटी के प्रतिनिधि, डाक्टरज़, प्रोफ़ैसर्ज़, टीचरज़, वुकला, बिज़नस मैन, मस्जिद बैयतुल आफियत अलमेरे के आर्कीटेक्ट और ज़िन्दगी के दूसरे विभिन्न विभागों से सम्बन्ध रखने वाले लोग शामिल थे।

प्रोग्राम के अनुसार 6 बजकर 10 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मार्की मैं तशरीफ़ लाए और प्रोग्राम का आरम्भ तिलावत क़ुरआन करीम से हुआ। अताउल क़य्यूम आरिफ़ साहिब ने तिलावत की और इस का अंग्रेज़ी भाषा में अनुवाद किया।

इस के बाद सबसे पहले अलमेरे सिटी कौंसल के मैंबर Ton Van der Berg जिनका सम्बन्ध सोशलिस्ट पार्टी से है ने अपना संक्षिप्त सम्बोधन प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा: सबसे पहले तो मैं सम्मान्नीय अमन के ख़लीफ़ा को हॉलैंड के सबसे दिलकश शहर में स्वागत कहता हूँ। अपनी पार्टी की तरफ़ से आपकी जमाअत के लोगों को भी स्वागत कहता हूँ जो कि इस देश के विभिन्न क्षेत्रों और अन्य देशों से आज यहां जमा हुए हैं। मैं अपने साथी कौंसिलरज़ जो आज यहां मौजूद हैं उनको भी आदाब प्रस्तुत करता हूँ। इमाम जमाअत अहमदिया मेरे विचार में दूसरी बार अलमेरे में तशरीफ़ लाए हैं। पहले अक्तूबर 2015 ई में तशरीफ़ लाए थे जब आपने इस मस्जिद की नींव रखी थी। मैं हुज़ूर को इस शहर में इस ख़ूबसूरत इमारत की वृद्धि करने पर मुबारकबाद प्रस्तुत करता हूँ। अहमदी यद्यपि मुसलमान देशों में काफ़ी मुसीबतें और तकलीफ़ें सहन रहे हैं अमन पसंद और क़ानून की पैरवी करने वाले शहरी हैं। परन्तु आप लोग अपने नारा "मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं" के द्वारा अन्त में इस दुनिया से नफ़रत और द्वेष को ख़त्म करने वाले बन जाऐंगे

हुज़ूर की यहां तशरीफ़ आवरी पर मैं एक बार फिर शुक्रिया अदा करता हूँ और उम्मीद करता हूँ कि आपका हॉलैंड में निवास बहुत ख़ुशगुवार होगा

उसके बाद Mr Rene Eekhuis जोकि अलमेरे सिटी कौंसल में एक राजनीतिक पार्टी 'Respect Almere" के चेयरमैन हैं उन्होंने अपना सम्बोधन प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा: आप सब पर सलामती हो। हमारी सयासी पार्टी के अनुसार धार्मिक आज़ादी प्रत्येक के लिए है और इस में मुसलमान भी शामिल हैं। यहां अलमेरे में एक मस्जिद और भी है जो अपने बच्चों को नफ़रत करना सिखाते हैं। हम इस मस्जिद को बंद करना चाहते हैं। कुछ महीने पहले हमें आपकी इस मस्जिद की तरफ़ से दावत मिली जो हमने स्वीकार कर ली। हमने अपनी पार्टी सरबराह Gerdwin Lammers के साथ इस मस्जिद का विज़ट किया। हमारी पार्टी यही चाहती है कि प्रत्येक को इज़्ज़त दी जाए और आपके लोकल इमाम सफ़ीर सिद्दीक़ी साहिब भी यही कर रहे हैं। हमारी पार्टी के निकट इस तरह के मेल मिलाप से एक दूसरे को समझने में बेहतरी आती है। आपकी जमाअत के यहां के लोकल इमाम बातचीत करने के लिए प्रत्येक समय तैय्यार रहते हैं। इसीलिए अलमेरे में जमाअत अहमदिया को स्वागत है। हमारी पार्टी के निकट आपका "मुहब्बत सब के लिए , नफ़रत किसी से नहीं" एक बहुत ही अच्छा रवैय्या है। हम अलमेरे में मस्जिद बनाने पर आपको मुबारकबाद देते हैं। आप सब शुक्रिया।

इस के बाद सिख कम्यूनिटी के एक रहनुमा सरदार Bhupindar Singh ने अपना सम्बोधन प्रस्तुत किया जिसमें उन्होंने कहा मैं हॉलैंड में मौजूद सिख कम्यूनिटी की तरफ़ से आज इस पवित्र दिन में आपको मुबारकबाद प्रस्तुत करता हूँ। मैं आपके मर्कज़ कादियान भी गया हूँ जहां मुझे निहायत सम्मान देखने को मिला और फिर मैंने यहां भी जमाअत अहमदिया के लोगों को काम करते देखा है, ये लोग बहुत मेहनत से काम कर रहे हैं। ये लोग पवित्र क़ुरआन के अनुवाद कर रहे हैं और मानव जाति को ख़ुदा का पैग़ाम पहुंचा रहे हैं जो कि अमन के लिए प्यार और किसी से नफ़रत न करने और हर धर्म और प्रत्येक से इज़्ज़त तथा सम्मान से व्यवहार करने का पैग़ाम है। अत: मैं यहां अलमेरे में और हॉलैंड में आप लोगों की जमाअत का दिल की गहराईयों से सम्मान करता हूँ। मैं एक बार फिर आपको मुबारकबाद प्रस्तुत करता हूँ। मेरे दिल में हज़रत साहिब की बहुत अधिक इज़्ज़त तथा सम्मान है जोकि इंग्लिस्तान से यहां तशरीफ़ लाए। मुझे अपनी सोशलिस्ट पार्टी दोस्त Mr Bommel और अन्य कौंसिलरज़ के साथ हुज़ूर से दो बार मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। अत: यहां आज अलमेरे में मस्जिद देखकर में बहुत ख़ुश हूँ। हमारी सिख कम्यूनिटी विश्वव्यापी धर्मों में डायलॉग पर यक़ीन रखती है और हमने एम्सटर्डम में अपने प्रोग्रामों में आपकी जमाअत को बुलाया है और उन्होंने हमें बहुत सी ऐसी बातें सिखाई हैं जिनका हमें इल्म नहीं था। हमें पता चला कि आप लोग भी एक ख़ुदा पर ईमान लाते हैं जो कि वास्तविक ख़ालिक़ है और बाक़ी ज़ात पात कोई चीज़ नहीं है। प्रत्येक के लिए एक जैसा प्यार है। इस वजह से सिख कम्यूनिटी के दिल में आप सब के लिए बहुत अधिक सम्मान है। हम आपको एक बार फिर मुबारकबाद देते हैं

इस के बाद अमीर साहिब हॉलैंड ने अपना सम्बोधन प्रस्तुत किया जिसमें उन्होंने संक्षिप्त रूप से मस्जिद के कवाइफ़ प्रस्तुत किए और कहा कि इस अवसर पर Mr Farhan जो कि आर्कीटेक्ट थे और Mr Vogelij जोकि constructor थे उन का वर्णन करना चाहता हूँ। उसके अतिरिक्त IAAAE की टीम, स्थानीय


**इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन**

**"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"**

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

**तालिबे दुआ**

**KHALEEL AHMAD**

**S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)**



**इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन**

**"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"**

**तालिबे दुआ**

**धानू शेरपा**

**सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)**

जमाअत के सदर Hanif Hendrick Sahib और उनकी टीम का ज़िक्र करना चाहता हों जिन्होंने बड़ी मेहनत से काम किया। इस के अतिरिक्त बेल्जियम और जर्मनी के कुछ दोस्तों का भी ज़िक्र करना चाहता हूँ जिन्होंने मस्जिद की बनाने में हिस्सा लिया और इसी तरह फ़ंडज़ इकट्ठा करने वाली कमेटी और सैंटर्ल मस्जिद की कमेटी का भी ज़िक्र करना चाहता हूँ। इसी तरह इन समस्त मर्द तथा औरतों और बच्चों का जो कई साल से इस मस्जिद की बनाने में अपना हिस्सा डालते रहे हैं। इन सबको याद रखना और उनका शुक्रिया अदा करना बहुत ज़रूरी है

अमीर साहिब ने कहा: इस मस्जिद के प्राजैक्ट पर रज़ाकारों ने 6500 घंटे बिना किसी बदला के काम किया। बहुत बड़ी संख्या है उन लोगों की जिन्होंने यहां काम किया। मैं हुज़ूर की सेवा में इन सब के लिए दुआ की दरख़ास्त भी करना चाहता हूं।

इस के बाद डच सियास्तदान Jerzy Soetekouw जिनका सम्बन्ध लेबर पार्टी (PVDA) से है और 2018 ई से बतौर Alderman काम कर रहे हैं और इस के अतिरिक्त अलमेरे के डिप्टी मेयर भी हैं, उन्होंने अपना सम्बोधन प्रस्तुत किया। महोदय ने कहा: आज यहां आना मेरे लिए सम्मान का कारण है। इस मस्जिद के उद्घाटन के अवसर पर आप सबके तशरीफ़ लाने पर मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूँ। आप में से अक्सर जानते होंगे कि यह क़स्बा केवल 42 साल पुराना है। इस तरह यह हॉलैंड का सबसे नया शहर है और आप एक नई ज़मीन पर खड़े हैं। इस क़स्बा की आबादी शून्य से शुरू कर 2 लाख 10 हज़ार तक पहुंच गई है। दुनिया-भर से और विभिन्न धर्मों से सम्बन्ध रखने वाले लोग अलमेरे में आकर आबाद हुए हैं। अत: आज हम 140 देशों से सम्बन्ध रखने वाली 119 नस्लों की एकता को भी मना रहे हैं। लोगों के विभिन्न होने में भी एक विशेष ताक़त है। हम लोग एक साथ हो कर एक दूसरे को प्रभावित कर सकते हैं और एक दूसरे से नई नई चीज़ें सीख सकते हैं। और यह मस्जिद और इस का उद्देश्य कि "मुहब्बत सब के लिए, नफ़रत किसी से नहीं " मुझे बहुत पसंद आया है। हम आज एक नई जमाअत को इस शहर में स्वागत करते हैं।

डिप्टी मेयर और Alderman होने की हैसियत से में इस विभिन्न सभ्यताओं पर आधारित समाज को सराहता हूं। हाँ अगर आप इस कसेरा लज्जाती को वास्तव मनाना चाहते हैं तो उस के लिए हमारी दो ज़िम्मेदारियाँ हैं, एक तो यह कि अलमेरे शहर के हर शहरी की बुनियाद एक ही चीज़ पर आधारित होनी चाहिए। अलमेरे में आप लोगों को पूर्ण आज़ादी है कि आप किसी चीज़ पर भी यक़ीन रखें और अपनी इच्छा से रहें। इसलिए समस्त शहरियों को चाहिए कि वे एक दूसरे के साथ सम्पर्क में रहें। यह स्थान विभिन्न लोगों से भरा हुआ देखकर अंदाज़ा हो जाता है कि नए सम्पर्क बनने भी शुरू हो गए हैं और यह बहुत ही ज़बरदस्त चीज़ है

दूसरी बात यह कि हम सिर्फ इसी अवस्था में आज़ाद कहला सकते हैं जबकि हर इन्सान के बुनियादी अधिकार का सम्मान किया जाए और प्रत्येक हमारे इस शहर में अपने आपको सुरक्षित समझ सके। यहां पर पुलिस भी मौजूद है और मैं बहैसीयत नायब मेयर भी आया हुआ हूँ इसलिए आप लोगों का कोई भी धर्म और अक़ीदा हो आप इस शहर के हुक्काम पर भरोसा कर सकते हैं

तीसरी बात यह कि हम आप लोगों की जमाअत से बहुत कुछ सीखना चाहते हैं क्योंकि जैसा कि मैंने पहले भी कहा कि हम सब इस शहर में नए हैं और हम सब मिलकर एक कम्यूनिटी को जन्म दे रहे हैं। हमारा एक अनोखा स्थान है क्योंकि सारे यूरोप में सिर्फ हमारा शहर ही है जिसमें सिर्फ एक नस्ल ही अभी तक आई है। इस शहर की तारीख़ बहुत संक्षिप्त है इसलिए हम हर-रोज़ इस शहर की तारीख़ लिख रहे हैं और मस्जिद का उद्घाटन भी इस का हिस्सा है। मुझे उम्मीद है कि मैं भी और इस शहर के दूसरे लोग भी आपकी जमाअत से बहुत कुछ सीखेंगे। मैं यह बात डिप्टी मेयर होने की हैसियत से नहीं बल्कि इस शहर का एक निवासी होने के नाता कह रहा हूँ।

डिप्टी मेयर ने अपने सम्बोधन के आख़िर में कहा कि अल्लाह तआला आप सब पर फ़ज़ल करे और आइए हम सब मिल कर इस महान शहर में इस मस्जिद के उद्घाटन को मनाते हैं। आप सब का शुक्रिया और यहां इस मस्जिद के उद्घाटन के अवसर पर आना मेरे लिए बहुत बड़ा सम्मान है। आप सब शुक्रिया।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने 6 बजकर 40 मिनट पर अंग्रेज़ी भाषा में ख़िताब फ़रमाया। इस ख़िताब का उर्दू से हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत है

**ख़िताब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला**

तशह्हुद,ताव्वुज़ के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: सम्मान्नीय महमाना किराम, आप सब पर अल्लाह तआला की तरफ़ से सलामती हो और बरकतें नाज़िल हों। सबसे पहले तो मैं आप सब का यहां अलमेरे में मस्जिद के उद्घाटन के इस प्रोग्राम की दावत स्वीकार करने पर शुक्रिया अदा करता हूँ। आजकल पश्चिम में रहने वाले बहुत से लोग इस्लाम और मुसलमानों के बारे में शंकाए रखते हैं। इस में कोई अतिश्योक्ति नहीं कि बहुत से लोग इस्लाम और इस के मानने वालों से भय महसूस करते हैं। आपका हमारी दावत स्वीकार करना और यहां आना यह प्रकट करता है कि आप लोग खुले दिल रखने वाले लोग हैं और विभिन्न कम्यूनिटीज़ और आस्था रखने वाले लोगों के मध्य दोस्ताना सम्बन्ध स्थापित करने के इच्छुक हैं।

इस से आप लोगों की धर्मों के मध्य बात करने की इच्छा का इज़हार होता है और मालूम होता है कि आप लोग इन्सानी इक़दार को महत्त्वपूर्ण जानते हैं। मैं दिली तौर पर आपके इस रवैय्या पर आपका शुक्रिया अदा करता हूँ और यक़ीन दिलाता हूँ कि हमारा धर्म हमें यह शिक्षा देता है कि धर्म हर इन्सान के अपने दिल का मामला है जो वह बिना किसी जबर के धारण करता है

इस अन्तर्गत कुरआन करीम स्पष्ट तौर पर वर्णन करता है कि धर्म के मामला में कोई जबर नहीं। मस्जिद का उद्घाटन विशेष रूप से एक धार्मिक प्रोग्राम है और यह आपके लिए कोई हैरानी की बात नहीं है कि हम अहमदी मुसलमान अपनी मस्जिदों से दिली और भावनात्मक जुड़ाव रखते हैं। अत: मस्जिद का उद्घाटन हमारे लिए बहुत भावनात्मक और ख़ुशी का अवसर है कि हमें यहां इस शहर में ख़ुदा तआला के बताए हुए तरीक़ा के अनुसार उस की इबादत करने के लिए एक स्थान उपलब्ध हो गया है। अलबत्ता आप समस्त शामिल होने वाले जो इस प्रोग्राम में शामिल हो रहे हैं, आपकी तो ऐसी कोई दिली जुड़ाव नहीं है लेकिन फिर भी आप कोशिश करके इस प्रोग्राम में सम्मिलित हुए हैं। इस से साबित होता है कि आप प्यार करने वाले, खुले दल के मालिक और बर्दाश्त करने वाले लोग हैं। इस से यह भी प्रकट होता है कि आप लोग यह जानना चाहते हैं कि मस्जिदें बनाने के उद्देशय तथा कारण क्या हैं। मैं इस पर भी आपका शुक्रिया अदा करता हूँ क्योंकि दूसरे धर्मों के एतिक़ादात का इल्म प्राप्त करना भी इन बांटने वाली दीवारों को गिराने के लिए अहम क़दम है जो हमारे बीच रोक हैं। इसी तरह इस से उन अफ़सानवी बातों की भी दूरी हो जाती है जोकि ख़्वाह-मख़ाह की बेचैनी और व्याकुलता पैदा करते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अवश्य यह मेरे लिए और हर अम्न पसंद मुसलमान के लिए बहुत दुख की बात है कि किसी ग़ैर मुस्लिम देश में लोगों में इस्लाम के बारे में भय हो और बहुत से लोग यह समझते हों कि मुसलमान और मस्जिदें समाज के अमन के लिए ख़तरा हैं। परन्तु हक़ीक़त इस के बिलकुल विपरीत है। अत: अगर स्थानीय लोगों में इस हवाला से कोई शंकाए हों तो मैं अब मस्जिदें की बनाने के उद्देश्य वर्णन करूँगा ताकि आप सब बेहतर तौर पर मस्जिद के महत्त्व को समझ सकें।

मस्जिद का बुनियादी उद्देश्य तो एक ख़ुदा की इबादत करना है। अत: मस्जिद वह स्थान है जहां मुसलमान ख़ुदा के सामने सिज्दा करने के लिए जमा होते हैं।

**इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस**

**ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उस के रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।**

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

**तालिबे दुआ**

**मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर( उत्तर प्रदेश)**

**हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम**

**खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।**

**तालिबे दुआ**

**Sohail Ahmad Nasir and Family**

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

मस्जिद की बनाने का दूसरा अहम उद्देश्य यह है कि मुसलमान इकट्ठे हो कर अपने आपसी सम्बन्धों को बेहतर करें और जमाअत की एकता को बढ़ावा दें। मस्जिदों के बनाने का तीसरा अहम उद्देश्य है कि मस्जिद ग़ैर मुस्लिम लोगों को इस्लामी शिक्षाओं से आगाही का माध्यम हो और यह कि व्यापक स्तर पर समाज के अधिकार अदा किए जाएं। अत: मस्जिद एक ऐसा स्थान है कि जहां मुसलमान जमा हो कर बिना किसी रंग तथा नस्ल के भेद के अपने पड़ोसियों और समाज के अधिकार पूरे करें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: यह स्पष्ट हो कि अगर कोई मस्जिद अमन और इन्सानियत की सहानुभूति फैलाने वाली नहीं है, और जहां ख़ुदा तआला और इस की सृष्टि के हक़ अदा नहीं किए जा रहे तो फिर ऐसी मस्जिद खोखली है और इस की उदाहरण ख़ाली ख़ौल जैसा है। इस्लाम की तारीख़ पर सरसरी नज़र डालने से भी यह चीज़ साबित होती है कि इस्लाम धर्म के संस्थापक मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में एक ऐसी ही तथा कथित मस्जिद बनाई की गई थी जहां पर नुकसान पहुंचाने वाली बातें परवान चढ़ती थी और समाज में आपस में बांटने की के बीज बोए जाते थे। यह मुसलमानों के मध्य नफ़रत के शोले भड़काने इसी तरह मुसलमानों और अन्य फ़िर्क़ों, खासतौर पर यहूदी क़बीलों के मध्य जंग छुड़वाने के लिए बनाई गई थी। इस के परिणाम स्वरूप क़ुरआन शरीफ़ में यह वर्णित है कि अल्लाह तआला ने रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह मस्जिद गिराने का हुक्म दिया था क्योंकि यह बदनीयती से बनाई गई थी। अत: इस मस्जिद को तोड़ दिया गया था। जैसा कि मैंने कहा कि यह घटना क़ुरआन शरीफ़ में भी वर्णित है। इसलिए यह घटना हमेशा मुसलमानों के लिए परज़ोर सचेतना का काम करेगी। इस से स्पष्ट हो जाता है कि अगर कोई मस्जिद अमन के घर के तौर पर जहां लोग दूसरों के अधिकार की अदायगी के लिए इकट्ठे हूँ प्रयोग नहीं होती , बल्कि उस की बजाय इंतिहापसंदी और नस्ली द्वेष को बढ़ावा देती है तो यह कभी भी अपना उद्देश्य पूरा नहीं कर सकती और न ही वास्तविक मस्जिद कहलाने की हक़दार है। एक मस्जिद का उद्देश्य सिर्फ उसी अवस्था में पूरा हो सकता है जब नमाज़ी मस्जिद में इस दृढ़ इरादा के साथ दाख़िल हों कि वे सिर्फ़ अल्लाह की इबादत करेंगे और मानव जाति की भलाई के लिए कदम उठाएंगे। मस्जिद का उद्देश्य सिर्फ इसी अवस्था में पूरा हो सकता है जब इबादत करने वालों के अंदर बे नफ़सी, विनम्रता और मानव जाति की सहानुभूति तथा मुहब्बत कूट कूट कर भरी हुई हो।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया एक और चीज़ में स्पष्ट करना चाहता हूँ कि एक मस्जिद विशेष रूप से धार्मिक और रुहानी इबादत-गाह है और ज़रूरी है कि वह हर किस्म की भौतिकता और हर ऐसी चीज़ से आज़ाद हो जिससे समाज का अमन बर्बाद होता है। समस्त ऐसी कार्यवाहीयां सख़्ती से मना हैं और इस्लाम ने ऐसी चीज़ों के लिए नफ़रत का इज़हार किया है

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: मस्जिदें में सिर्फ ऐसे प्रोग्राम आयोजित करने की आज्ञा देती है जिस में ख़ुदा तआला की इबादत की तरफ़ ध्यान दिलाया जाए या इस्लाम की अमन वाली तब्लीग़ की तरफ़ ध्यान दिलाया जाए या समाज की ज़रूरतों पूरी करने की तरफ़ ध्यान दिलाया जाए। जब हम मस्जिदें बनाते हैं तो जहां हम ख़ुदा तआला की इबादत के लिए पाँच वक़्त जमा होते हैं और जहां हम यहां पर अपनी रुहानी और अख़लाक़ी बेहतरी के लिए धार्मिक प्रोग्राम आयोजित करते हैं, वहां बाक़ायदगी से ऐसे प्रोग्राम भी आयोजित करते हैं जिनमें पड़ोसियों और व्यापक स्तर पर समाज की सेवा करने के लिए स्कीमों सोची जाती हैं

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: हम ऐसे मंसूबे बनाते हैं जिनके द्वारा ग़रीबों और ज़रूरतमंदों की मदद कर सकते हैं और यतीमों के अधिकार पूरे कर सकते हैं और समाज के वंचित और कमज़ोर वर्ग को खाने पीने की की वस्तुएं उपलब्ध कर सकते हैं। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से इन कोशिशों में वृद्धि करने के लिए हम ने एक विश्वव्यापी रफ़ाही संस्था "ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट' के नाम से स्थापित की है। हम सारा वर्ष स्थानीय सतह पर सारी दुनिया में चैरिटी की विभिन्न आयोजित करते हैं। उदाहरण के तौर पर अफ़्रीक़ा में जहां हम दूसरों को इस्लाम की शिक्षाओं से परिचित करवाने के अतिरिक्त मस्जिदें बनाते हैं वहां स्थानीय लोगों की नस्ल और धर्म से उच्च होकर सहायता भी करते हैं। हम हस्पताल, क्लीनिक और स्कूल बनाते हैं जहां प्रत्येक को स्वागत कहा जाता है। वास्तव में वे लोग जो हमारे स्कूलों और हस्पतालों में आते हैं उनमें से अधिकतर का हमारी जमाअत से सम्बन्ध नहीं होता।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: फिर सिर्फ और सिर्फ इन्सानियत की सेवा और वंचित वर्ग की मदद करने का उद्देश्य लेकर हमने इन्सानी सेवा का एक प्रोजेक्ट शुरू किया है जिसके द्वारा अफ़्रीक़ा के दूरदराज़ के देहातों और कस्बों में पानी उपलब्ध करते हैं। हमारे इंजीनीयर्ज़ बोर निकाल कर नलके लगाते हैं जो कि स्थानीय लोगों को आसानी से पीने का साफ़ पानी उपलब्ध करते हैं। जब तक आप अपनी आँखों से न देख लें, आप इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकते कि किस तरह स्थानीय लोग जिन्हें साफ़ पानी का विचार तक नहीं होता वे पहली बार टूटियों से बहता हुआ पानी देखकर निहायत ख़ुशी और भावनाओं से मग़लूब हो जाते हैं। इंतिहाई ग़ुर्बत और दरिद्रता में जन्म लेने वाले मासूम बच्चे अपनी हैरत और ख़ुशी पर क़ाबू नहीं पा सकते। यह स्थानीय लोग एक नस्ल के बाद दूसरी नसल से रोज़ाना की बुनियाद पर अपने सिरों पर बर्तन और बालटियां रखकर मीलों की दूरी तय करके घरेलू प्रयोग के लिए तालाबों से पानी लेकर आने पर मजबूर होते हैं और यह पानी जिसके लिए वे इतनी मशक़्क़त करते हैं वे भी गन्दा होता है और कई बीमारियों का कारण होता है। अत: इस अवस्था में जब यह मायूसी का शिकार लोग ताज़ा और साफ़ पानी देखते हैं तो ऐसे लग रहा होता है जैसे उन्हें सारी दुनिया के खज़ाने मिल गए हों।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:अत: हमारा ईमान है कि अगर एक मुसलमान अल्लाह तआला की इबादत और मस्जिद के अधिकार अदा करने की इच्छा रखता है तो उस के लिए अनिवार्य है कि वह मानव जाति के भी अधिकार अदा करे। मुसलमान की नज़र में अल्लाह तआला की सेवा और इन्सानियत की सेवा आपस में अनिवार्य तौर पर जुड़ी हुई है। अगर एक मुसलमान ख़ुदा न करे दूसरों को तकलीफ़ और परेशानी देता है और सहानुभूति नहीं दिखा सकता तो वह बावजूद कि बाक़ायदगी से ख़ुदा तआला की इबादत करता है , इस की समस्त इबादतें निरर्थक और फ़ुज़ूल होंगी। अल्लाह तआला क़ुरआन शरीफ़ की सूरत अल्माऊन आयत 3 से 7 मैं वर्णन फ़रमाता है कि "वही शख़्स है जो यतीम को धुतकारता है। और मिस्कीन को खाना खिलाने की तरग़ीब नहीं देता। अत: उन नमाज़ पढ़ने वालों पर हलाकत हो जो अपनी नमाज़ों से ग़ाफ़िल रहते हैं।" ऐसे लोग दिखावा करते हैं क्योंकि वे बन्दों के अधिकार पूरे नहीं कर रहे होते। अत: ऐसे लोगों की दुआएं स्वीकार नहीं होतीं। यहां अल्लाह तआला ने उन लोगों पर लानत भेजी है जो उस की इबादत तो करते हैं लेकिन कमज़ोर और ज़रूरतमंदों के अधिकार अदा नहीं करते और यह ऐलान किया गया है कि ऐसे लोगों की दुआएं कभी स्वीकार नहीं होंगी , उनकी इबादतें और उन का मस्जिदों में जाना धोखा देना और दिखावे के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। क़ुरआन करीम के इस हवाला से बिलकुल स्पष्ट है कि ऐसे लोगों की इबादतें व्यर्थ हैं और उनकी यह मुनाफ़िक़ाना हरकतें उन्हें सिर्फ अपमान और तबाही की तरफ़ लेकर जाएँगी। अत: एक मस्जिद हमारा ध्यान सिर्फ़ ख़ुदा तआला के अधिकार की अदायगी की तरफ़ ही नहीं करवाती बल्कि मानव जाति के अधिकार और इन्सानियत की सेवा को महत्त्वपूर्ण भी बतलाती है। जब एक

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

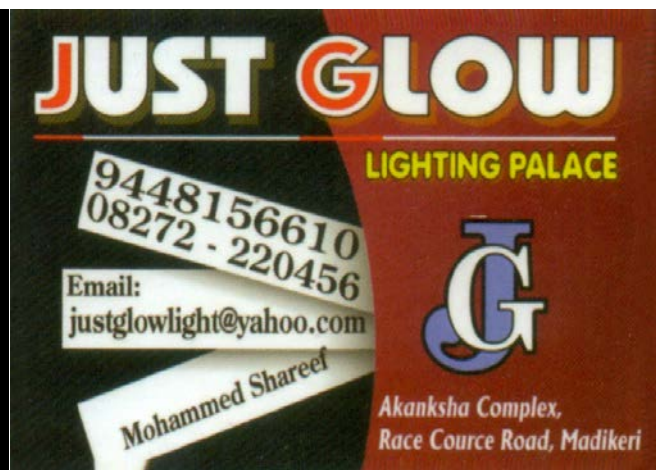


इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 5 Thursday 4 June 2020 Issue No.23

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

वास्तविक मस्जिद के पीछे यह बुनियादी उद्देश्य हों तो फिर आप लोगों के पास इस मस्जिद से भयभीत होने की कोई वजह नहीं होनी चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इस्लाम ने बार-बार पड़ोसियों का विचार रखने और उनके अधिकार अदा करने पर-ज़ोर दिया है। उदाहरण के तौर पर सूरत अन्निसा की आयत 37 मैं जहां क़ुरआन करीम मुसलमानों को यह हुक्म देता है कि वे अपने माता पिता और अपने ख़ानदानों से प्यार तथा मुहब्बत का सुलूक करें वहां इस बात का भी हुक्म देता है कि आप समाज के कमज़ोर लोगों की ज़रूरतें पूरी करें और फिर पड़ोसियों के अधिकार की अदायगी का ख़ासतौर पर ज़िक्र किया गया है। मुसलमानों को अपने पड़ोसियों के साथ चाहे ज़ाती सम्बन्ध हो या न हो प्यार करने और उनकी सुरक्षा करने और ज़रूरत के समय उनकी मदद करने के लिए प्रत्येक समय तैय्यार रहने की शिक्षा दी है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इस्लाम में पड़ोसी की प्रशंसा बहुत व्यापक है। इस में आपके साथ काम करने वाले, आपके अधीन आने वाले और सफ़र में साथ बैठने वाले भी शामिल हैं। इस में सिर्फ वही लोग शामिल नहीं हैं जिनके घर आप के घरों के साथ जड़े हुए हैं बल्कि इस में समस्त लोग शामिल हैं। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि ने फ़रमाया कि आपके इर्दगिर्द के चालीस घर पड़ोसी में शामिल हैं। अत: यह कहा जा सकता है कि इस शहर के समस्त लोग इस मस्जिद या उस मस्जिद में इबादत करने वालों के पड़ोसी हैं। इस से हट कर उस के कि हमारे पड़ोसी मुसलमान हैं या ग़ैर मुस्लिम, उनका ध्यान रखना, उनके अधिकार पूरे करना और इस बात की यक़ीन करना कि हम उनके लिए कोई समस्या या मुश्किल पैदा न करें हमारा धार्मिक कर्तव्य है। यह हमारी तरफ़ से कोई एहसान नहीं है बल्कि यह हमारा धार्मिक कर्तव्य है। दरहक़ीक़त रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने पड़ोसियों के अधिकार की अदायगी के महत्त्व पर इस क़दर ज़ोर दिया कि मुझे लगा कि शायद पड़ोसियों को विरासत के अधिकार मिल न जाएं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: संक्षिप्त रूप से अब यह मस्जिद बनी हुई है इस से हमारे अल्लाह तआला की इबादत के अधिकार में ही सिर्फ वृद्धि नहीं हुई बल्कि उस के साथ साथ स्थानीय समाज की सेवा करने और समाज में सकारात्मक हिस्सा डालने की ज़िम्मेदारी कई गुना बढ़ गई है। यहां के स्थानीय अहमदी इस शहर के समस्त लोगों को अपना पडोसी समझेंगे और अपने ज़िम्मा उनके अधिकार को समझेंगे और उन अधिकार को अपनी समस्त योग्यताओं के साथ पूरा करने की पूरी कोशिश करेंगे। जब कभी आपको हमारी मदद की ज़रूरत होगी तो हम जिस तरह भी हो सका आपकी मदद और सहयोग करने का वादा करते हैं। मुझे यक़ीन है कि यहां के स्थानीय अहमदी मुसलमान स्थानीय समाज की तरफ़ अपने ऊपर आने वाले कर्तव्यों को निहायत संजीदगी से लेंगे और हमेशा इस शहर में भरपूर हिस्सा डालने की पूरी कोशिश करेंगे और वफ़ादार और ख़ैरख़ाह शहरी बनेंगे जो कि अपने समाज का भरपूर विचार रखने वाले होंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इन बातों की रोशनी में मैं इस अवसर से लाभ उठाते हुए स्थानीय अहमदी मुसलमान दोस्त को भी ध्यान दिलाना चाहूँगा कि उन्हें हमेशा उच्च अख़लाक़ का प्रदर्शन करना चाहिए और इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं पर अनुकरण करना और समाज की सेवा करना चाहिए। उम्मीद है कि वह तक़्वा से काम लेते हुए निहायत संजीदगी के साथ अपने पड़ोसियों और अन्य स्थानीय लोगों के ज़हनों में इस्लाम के हवाला से मौजूद भय तथा शंकाओं और ग़लत दृष्टिकोण को दूर करने की पूरी कोशिश करेंगे। इंशा अल्लाह

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: मुझे यक़ीन है कि अब इस मस्जिद का उद्घाटन हो चुका है इस की वजह से हमारी जमाअत और यहां के स्थानीय लोग और अधिक लगभग आ जाऐंगे और हमारे मध्य दोस्ती का यह बंधन मज़बूत से मज़बूत होता चला जाएगा। मुझे यक़ीन है कि आपसी प्यार तथा मुहब्बत की रूह में वृद्धि होती चली जाएगी और आप लोग इस मस्जिद को अमन और मानव जाति की भलाई की निशानी के तौर पर देखेंगे। इस वक़्त पहले से

पृष्ठ 1 का शेष

आ जाता है। दानिशमंद और बुज़ुर्ग इन्सान इस से लाभ उठा सकता है और वह यह कि नमाज़ पर निरन्तरता करे और पढ़ता जाए। यहां तक कि इस को आन्नद आ जाए और जैसे शराबी के ज़हन में एक लज़्ज़त होती है जिसका प्राप्त करना उस का मूल लक्ष्य होता है। इसी तरह से ज़हन में और सारी ताक़तों का रुझान नमाज़ में उसी आन्नद का प्राप्त करना हो और फिर एक ख़ुलूस और जोश के साथ कम से कम इस नशा करने वाले की तरह के वेदना और व्यथा उस परेशान दिल की तरह ही एक दुआ पैदा हो कि वह आन्नद प्राप्त हो तो मैं कहता हूँ और सच कहता हूँ कि निसन्देह निसन्देह वह लज़्ज़त प्राप्त हो जाएगी। फिर नमाज़ पढ़ते वक़्त उन लाभ का प्राप्त करना भी समक्ष हो जो इस से होते हैं और उपकार सम्मुख रहे। اِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ (हूद:115) नेकियां बुराइयों को नष्ट कर देती हैं। अत: उन नेकियों को और आनन्दों को दिल में रखकर दुआ करे कि वह नमाज़ जो कि सिद्दीक़ों और मुहसिनों की है , वह नसीब करे। यह जो फ़रमाया है اِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ(हूद:115) अर्थात नेकियां या नमाज़ बुराइयों को दूर करती है या दूसरे स्थान पर फ़रमाया है कि नमाज़ अश्लीलता और बुराइयों से बचाती है और हम देखते हैं कि कई लोग बावजूद नमाज़ पढ़ने के फिर बुराइयां करते हैं। इस का उत्तर यह है कि वे नमाज़ें पढ़ते हैं मगर न रूह और सच्चाई के साथ। वे सिर्फ़ रस्म और आदत के तौर पर टक्करें मारते हैं। उन की रूह मुर्दा है। अल्लाह तआला ने उनका नाम नेकियां नहीं रखा और यहां जो "हसनात" का शब्द रखा अस्सलात का शब्द नहीं रखा। बावजूद के अर्थ वही हैं। इस का कारण यह है कि ताकि नमाज़ की ख़ूबी और हुस्न तथा सुन्दरता की तरफ़ इशारा करे कि वह नमाज़ बुराइयों को दूर करती है जो अपने अन्दर एक सच्चाई की रूह रखती है और फ़ैज़ का प्रभाव इस में मौजूद है वह नमाज़ निसन्देह-निसन्देह बुराइयों को दूर करती है। नमाज़ उठने बैठने का नाम नहीं है। नमाज़ का मग़ज़ और रूह वह दुआ है जो एक लज़्ज़त और आन्नद अपने अंदर रखती है।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 140 से 143 प्रकाशन 2008 कादियान)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

कहीं बढ़कर हम सब पर फ़र्ज़ है चाहे मुसलमान हैं या ग़ैर मुस्लिम, कि हम धार्मिक मतभेदों को एक तरफ़ करके अमन की स्थापना के लिए मिलकर काम करें और इन्सानियत के नाम पर एक साथ हो जाएं और अपनी क़ौम की बेहतरी के लिए काम करें और दुनिया में अमन स्थापित करने की पूरी कोशिश करें। अल्लाह तआला मानव जाति को यह सब करने के योग्य बनाए और हिक्मत प्रदान करे। आमीन।

आख़िर पर मेरी दुआ है कि यह मस्जिद हमेशा के लिए रोशनी की किरण साबित हो जिससे हर तरफ़ इन्सानी सहानुभूति , अमन और प्यार ही फूटे। आमीन। इन शब्दों के साथ मैं आप सब का इस मुबारक आयोजन में शामिल होने पर एक बार फिर शुक्रिया अदा करता हूँ।

आख़िर पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई जिसमें समस्त मेहमान अपने अपने तरीक़ पर शामिल हुए।

इस के बाद इस आयोजन में शामिल समस्त मेहमानों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ खाना खाया। खाने के बाद कुछ मेहमानों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त किया। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ कुछ देर के लिए औरतों की मार्की मैं तशरीफ़ ले गए

प्रोग्राम के अनुसार साढ़े आठ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने मस्जिद बैयतुल आफियत तशरीफ़ ला कर नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद वापस नन स्पैट जाने के लिए रवानगी हुई 9 बजकर 45 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की "बैयतुन्नूर" नन स्पैट तशरीफ़ लाए और हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad